Regi. No.: MP HIN / 2006 / 16764 डाक पंजीयन क्र. म.प्र. भोपाल / 632 /2018 - 20

वीर निर्वाण संवत २५४३
माह- जुलाई २०१८
अङ्क -४ (१८५)
वर्ष -१३ (१८)

विरागवाणी

मासिक

आशीर्वाद

संत शिरोमणि प.पू. आचार्य श्री विरागसागर जी महाराज

प्रेरक : ब्र. श्री विशल्य भारती जी
निर्देशन : मुनि श्री विवर्धन सागर जी महाराज
सम्पादक : इंजी.आनन्दकुमार जैन, 9425620668
175, एम. गौतम नगर, भोपाल
सहसम्पादक : श्री देवकुमार जैन गुड़ा
४९/सी, कस्तूरबा नगर, भोपाल
मो. 09425608438
परामर्श मण्डल : डॉ. प्रो. सनत जैन, जयपुर
: श्री अनिल सेठिया महुआ (भीलवाड़ा)
: श्रीमति प्रमिला जैन 'पम्मी' कोटा
: प्रो.श्री मयंक जैन, टीकमगढ़
: श्री मुकेश जैन, पथरिया
: श्री कपूरचंद बंसल, जतारा
प्रकाशक एवं प्रबंध सम्पादक : श्री अनूप कुमार जैन
कार्यालय : जी-१४१ गौतम नगर, भोपाल-२३
☎: 0755-2789703, मो.9425016879
Email-viragvani.jain@yahoo.com
(बैंक ड्राफ्ट 'विरागवाणी'के नाम से भेजें) पत्रिका के सम्बंध में पत्राचार एवं रचनाएँ कार्यालय के पते पर भेजें
कार्पोरेशन बैंक : A/c No. 065300201000101
IFSC CODE : CORP0000653
स्वामित्व : श्री सम्यग्ज्ञान दि. जैन विराग विद्यापीठ, भिण्ड (म.प्र.)

इस वेबसाइट से गणा. विरागसागर जी के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करें। www. ganacharyaviragsagar.org

विरागवाणी सदस्यता

परम शिरोमणी संरक्षक	-	५१०००/-
शिरोमणि संरक्षक	-	११०००/-
परम संरक्षक	-	५०००/-
संरक्षक	-	३१००/-
दस वर्ष	-	११००/-
मूल्य	-	१०/-

- **समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल होगा।**
- **प्रकाशित विचारों से संपादक की सहमति जरूरी नहीं हैं। वह लेखक के अपने विचार हैं।**

पल्लव दर्शिका

पल्लव

❖ **सम्पादकीय :**
- गुरु हमें जगाते हैं : इंजी.आनन्दकुमार ४
- आत्मचिन्तन ५
- जिनोपदेश : श्रमणी आर्यि.विजिज्ञासाश्री माता ५

❖ **प्रवचन एवं लेख**
- देश के नाम संदेश : प.पू.श्री विरागसागर महा. ६
- मर्यादा में जीना मनुष्य ..: श्रमणा.विमर्शसागरजी ८
- बैर-विरोध की नहीं समता की जीत होती है : प.पू.श्री विरागसागर महामुनिराज ९
- सूर्योदय के पूर्व उठें : संस्कार सुरभि से साभार १०
- धर्म और धर्मात्मा की रक्षा का पर्व रक्षा बंधन : प.पू.श्री विरागसागर महामुनिराज ११
- लड्डू की तरह है गुरुदेव : श्रमण मुनि विशोकसागर जी महाराज १५
- हिंसा से बढ़ती है हिंसा : प.पू.श्री विरागसागरजी १६
- धर्मात्मा की हँसी : श्रमण संस्कृति पर कलंक आचार्य विशुद्धसागर जी महाराज १७
- जिन्दगी प्रश्न नहीं,... : आ.विनम्रसागर जी महा.१८
- रात्रि भोजन में भावशुद्धि :आर्यि विशिष्टश्रीमाता १९
- सम्मेद शिखर की... : आर्यि. विबोधश्री माताजी २०
- साधक बने बाधक...: आर्कि विश्वासश्री माता २१
- कष्ट भी किनारे कर...आर्यि. विविक्तश्रीमाताजी २२
- शंका-समाधान : प.पू. श्री विरागसागर जी २४
- उपसंघों के वर्षायोग- २०१८ का विवरण २८
- संगति का प्रभाव : श्रमण मुनि विशेषसागर जी ३५
- विराग सेतु ... : डॉ. उदयचन्द्र जैन ३६
- अहंकार का परिणाम : आर्यि. विदूषीश्री माताजी ३९

❖ **कविताएँ**
- गुरु वंदना में समर्पित : आ. विसंयोजनाश्री माता २३
- सार्थक वृद्धत्व : आ.श्री विशुद्धसागर जी २३

❖ **स्वास्थ्य जगत :**
- घुटने का दर्द : आर्यि.विवक्षाश्री माताजी ३५

❖ **समाचार** ४०

❖ **विराग वर्ग पहेली** ४२

संपादकीय

गुरु हमें जगाते हैं

इंजी. आनन्द कुमार जैन

इस निकृष्ट पंचमकाल में उत्तम कुल, उत्तम शरीर, उत्तम धर्म, उत्तम गुरु निरोगी शरीर आदि साधनों की प्राप्ति अत्यंत दुर्लभ है। गुरु की भक्ति संसार के कष्टों से मुक्ति दिलाती है। जन्म, जरा, मृत्यु रूप व्याधियों का शमन करने के लिये अचूक रसायन है। रामवाण औषधिक है। जब तक संचार का उच्छेद न हो तब तक श्री गुरुओं के चरणों में भक्ति बनी रहे। गुरु में और पारस पत्थर में अन्तर है यह सब जानते हैं लेकिन पारस तो लोहा को सोना ही बनाता है परन्तु गुरु शिष्य को अपने समान महान बना लेते हैं। गुरु के समान कोई दाता नहीं और शिष्य के समान याचक नहीं। त्रयलोक की सम्पत्ति से भी बढ़कर ज्ञान दान गरु ने ही दिया है। गुरु के बिना ज्ञान उत्पन्न नहीं होता। गुरु के बिना मोक्ष नहीं मिलता, गुरु के बिना कोई सत्य का साक्षात्कार नहीं कर सकता। गुरु के बिना सम्यक्दर्शन हो नहीं सकता। जो अंधकार से हटाकर प्रकाश में ला दे वहीं तो सच्चा गुरु है गुरु आगम के मर्मज्ञ होते हैं। सागर के समान गंभीर, पृथ्वी के समान सहिष्णु, आकाश के समान विशाल तथा वायु के समान निसंग गुण से युक्त होते हैं। जिस प्रकार जहाज के बिना समुद्र से पार नहीं हो सकते, उसी प्रकार गुरु के बिना इस संसार रूपी समुद्र को कोई पार नहीं कर सकता। गुरु के साथ जिसका संबंध है, उसका जीवन महानतम है। क्योंकि जीवन का प्रियतम और निकटतम संबंध गुरु शिष्य का होता है। आचार्यों ने भी कहा है- जैसे माता कुमाता नहीं होती वैसे ही गुरु भी कभी कुगुरु नहीं होते। पुत्र कुपुत्र हो सकता है शिष्य कुशिष्य हो सकता है, पर गुरु कभी कुगुरु नहीं होते। गुरु अपने स्नेहमयी स्पर्श से शिष्य में आध्यात्मिक शक्ति का संचरण कर उनमें चेतना जान फूंक देते हैं। जान समझकर गुरु का चुनाव करो। छानकर जल पियो। जो बिना विचार किये गुरु करता है वह चौरासी के चक्कर में भटकता है। संत तो उस आम वृक्ष के समान होते हैं जैसे आम के वृक्ष में कोई बालक पत्थर मारता है, तो वृक्ष उसका अपकार न कर अपनी परोपकारी वृत्ति को दर्शाते हुये मीठे फल प्रदान करता है। उसी प्रकार संत को भी कोई निन्दा के पत्थर मारे उसे आशीष व परोपकार के मीठे फल ही प्राप्त होते हैं। गुरु हमेशा स्व कल्याण के साथ-साथ पर कल्याण की भावना से भी ओत-प्रोत रहते हैं।

परम पूज्य गणाचार्य १०८ श्री विरागसागर जी महाराज ने बताया कि तीर्थंकर भगवन्तों के पंचकल्याणक महोत्सव एवं गुरुओं की जन्म जयंती व दीक्षा दिवस का महोत्सव मनाना यह एक माध्यम है पूज्य पुरुषों के गुणों का स्मरण करने का, भक्ति स्तुति करने का, उनके द्वारा किये गये उपकारों का स्मरण करने का। वास्तव में यह महोत्सव उनके लिये नहीं, अपने लिये मनाये जाते हैं क्योंकि बार-बार इस प्रकार के महोत्सव मनाने वा उनके गुणों का स्मरण करने से हमारे अन्दर भी उन जैसे बनने की इच्छा शक्ति प्रकट होती है कि जब आप इन महान गुणों को प्राप्त कर सकते हैं तो हम क्यों नहीं कर सकते हैं। अर्थात् अवश्य कर सकते हैं। यही कारण है कि आचार्यों ने प्रथमानुयोग को बोधि समाधिनिधानं ऐसा कहा है। गणाचार्य श्री ने बताया कि धरती पर कुछ लोग बडप्पन लेकर आते हैं, कुछ पुरुषार्थ से बड़े बनते हैं और कुछ बड़े तो नहीं होते पर बड़प्पन का बाना ओढ़ लेते हैं।

आत्मचिन्तन

(प.पू. आ. श्री १०८ विमलसागर जी महाराज की नित्य डायरी से साभार १५.७.१९८२)

।। ऊँ ह्रीं णमो लोए सव्व साहूणं।।

हे आत्मन्! अनादि काल से प्राणी विषय कषाय के कारण संसार में अन्य मरण के महान दुख होता है। विषय- बारबार सेवन को कहते हैं वे पांच प्रकार के होते हैं यथा- १. स्पर्शनद्वन्द्रिय का छूना। २. रसनाका चखना, ३. घ्राण का सूंघना, ४. चक्षु का देखना, ५. कर्ण का सुनना। भव्यात्माओं ऐ सब विषय संसार चक्र में फसा देते हैं। जिससे महान दुख उठाते रहते हैं। कषाय जो आत्मा को कषै (कृषै) दुख दे वे कषाय चार हैं- क्रोध, मान, माया, लोभ। क्रोध-गुस्सा, मान घमण्ड, माया-छलकपट, लोभ मूर्छा आसक्यता। स्पर्शन इन्द्रिय के कारण हाथी जंगल का राजा होकर कागज की हथनी द्वारा बन्ध को प्राप्त होता है और स्पर्शन इन्द्रिय के कारण मनुष्य अपने जपतप छोड़कर अर्हंनिश स्पर्शन विषय वासना में फसकर धर्म कर्म भूल जाता है काम के दस माणों के वश होकर अपनी सारी जीवन लीला को समाप्त कर देता है। और आशाओं की वृद्धि होकर दुखी करती है आशाओं की वृद्धि अर्हंनिश चलती रहती है जो कभी पूरी नहीं हो सकती।

अत: हे विमलात्मन्! तुम स्पर्शन इन्द्रिय के विषय कषाय से बचकर उस स्पर्शन इन्द्रिय से तप ध्यान करोगे तो मुक्ति की ओर बढ़ जाओंगे।

जिनोपदेश

श्रमणी आर्यिका विजिज्ञासा श्री माता जी

परिभूता नरा ये च कृतो यैश्च पराभव:।
न: तै:ि सह क्रियाद गोष्ठी य इच्छेद् भूतिमात्मन:।।

अर्थ- जो अपने ऐश्वर्य का इच्छुक है उस अपराधी व अपराध का दण्ड भोक्ता के साथ कथा गोष्ठी नहीं करना चाहिए।

यथाहिर्मन्दिराविष्ट: करोति सततं भयम्।
अपराध्या: सदोषाश्च तथा तेऽपि गृहागता:।।

जिस प्रकार अपने घर में प्रविष्ट अहि (सर्प) निरन्तर भयोत्पाद होता है उसी प्रकार अपराध करने वाला और अपराध का दण्डभोक्ता दोनों ही कृष्ण नाग वत् परिहार्य हैं, त्यागने योग्य है।

यथान्ध: कुपितोहन्यात् यच्चैवाग्रेव्यवस्थितम्।
क्रोधान्धोऽपि तथैवात्र तस्मात्तं दूरतस्त्यजेत्।।

जिस प्रकार अंधा पुरुष कुपित होने पर जो कोई भी सामने आता है उसे ही मार देता है। उसी प्रकार क्रोधी पुरुष भी बिना विचारे चाहे जिसे जो सामने आया उसे मार डालता है। अत: क्रोधी के सामने नहीं जाना चाहिए।

कुद्धो हि सर्प इव यमेवाग्रे पश्यति तत्रैव रोष विषमुत्सृजति।

कोषा विष्ट पुरूष जिसको भी समक्ष पाता है उसी पर विषधर सर्प के समान झपटता है और कोप विष उगलता है। अभिप्राय यह है कि सर्प जिस प्रकार दोषी-निर्दोषी जो भी सामने आया उसे ही डस डालता है उसी प्रकार क्रुद्ध पुरुष की दशा है।

देश के नाम संदेश

(मनुष्य की तरह पशु-पक्षी भी स्वतंत्र हो)

प.पू. राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री १०८ विरागसागर जी महामुनिराज के ध्यान शिविर से

बन्धुओं आज भारत देश को स्वतंत्र हुए ७० वर्ष व्यतीत हो चुके। ७१ वाँ वर्ष प्रारंभ हो रहा है। यदि हम आज से ७० वर्ष पीछे देखे तो उस समय अपना देश परतंत्र था। जिन्होंने परतंत्रता नहीं देखी उन्हें पता ही नहीं कि परतंत्रता क्या कहलाती है।

सोने के पिजड़े के अंदर रत्नों की कटोरियों में काजू किसमिश आदि मसाले डली खीर रखी हो कई तरह की सुगंधित द्रव्य उसमें डली हो और वह तोते के पिजड़े में रखी हो उस समय उस तोते से पूछा जाये कि पिजड़े में रहना पसंद है या स्वतंत्रता पसंद है तो वह यही कहेगा मुझे तो आकाश में उड़ान भरना पसंद है। उसके लिए सोने के पिजड़े, स्वर्ण की रत्नों की कटोरी और उस स्वादिष्ट खीर की कोई कीमत नहीं होती उसे तो स्वतंत्रता पसंद होती है। पिजड़े के अंदर तोते को सारी सुविधाएँ सुलभ है लेकिन फिर भी वह उसमें रहना नहीं चाहता। वह स्वतंत्र रहना चाहता है क्योंकि स्वतंत्रता में जो आनंद आता है वह परतंत्रता में नहीं आता है।

आप सभी को पता है अपने देश के कितने स्वतंत्रता सैनानी हुए। उनमें से कितनों को बंधी बनाया गया कितनों को फांसी के फंदे पर लटकाया गया, कितनों को गोलियों से भूंजा गया, कितनों पर लाठी का प्रहार किया गया लेकिन फिर भी वे पीछे नहीं हटे। जब नेहरु जी को अंग्रोजों ने बंधी बना लिया था। उस समय उन्हें मिट्टी मिला भोजन दिया गया। नेहरू जी ने उस रोटी को हाथ में ले, देने वाले को दिखाया और कहा इस रोटी में मिट्टी है तो अंग्रेजों ने कहा- यह तुम्हारे देश की मिट्टी है इसे खाकर अपनी भूख मिटालों, नेहरू जी ने कहा- हमारे देश की मिट्टी खाने के लिए नहीं पूजा करने के लिए है इसकी हम पूजा करते है।

बन्धुओ! अपने देश की मिट्टी पर लोगों को इतना गर्व था उसके प्रति इतना सम्मान उनके मन में था। आज आप लोग सोच रहे होंगे कि साधु-संतों को देश की स्वतंत्रता से क्या लेना। बन्धुओ! ऋषि मुनियों ने जिस धरती पर जन्म लिया है उसकी खुशहाली के लिए भी उन्होंने काफी तपस्या की है। अभी आपके सामने मंगलाचरण किया गया और उसमें कहा गया-

देशस्य राष्टस्य पुरस्य राज्ञः।
करोतु शांति भगवान जिनेन्द्रः।।

यहाँ ऋषि मुनि भी यह प्रार्थना करते हैं कि- हे भगवन्! हमारे देश में, हमारे, राष्ट्र, में, नगर में, परिवारों में और परिवार में रहने वाले सभी सदस्यों में शांति हो सुख और आनंद रहे।

भारत देश का पुराना नाम अजनाव वर्ष था लेकिन ये बातें मात्र वेद पुराणों में लिखी रह गई। हमने उन्हें देखने का प्रयास ही नहीं किया। यही कारण है हमें पता ही नहीं कि हमारा देश पहले किस नाम से जाना जाता था। पहले इसे अजनाब वर्ष कहते थे क्योंकि उस समय नाभिराय का शासन था उनके हाथ घुटनों से भी अधिक लम्बें होने से उन्हें अजान बाहू कहते थे पुण्यवान लोगों के हाथ आम व्यक्तियों की अपेक्षा लम्बे होते हैं। जानु का अर्थ होता है घुटने, जिनके हाथ घुटनों का स्पर्श करते थे इसलिए उन्हें अजानबाहू कहते थे और उनके नाम से ही देश का नाम अजनाव वर्ष था।

कालान्तर में ऋषभदेव हुए और उनके पुत्र भरत चक्रवर्ती हुए जिन्होंने समस्त देश पर एक छत्राधिपत्य राज्य किया था उन्होंने प्रजा में अनुशासन, शासन के साथ आत्मानुशासन के कदम उठाये तो प्रजा ने सहज मात्रा में अपने देश का नाम परिवर्तित कर भारत देश रख लिया। भरतचक्रवर्ती के नाम से इस देश का नाम भारत देश रखा गया। कालान्तर में अंग्रेज लोग यहाँ आये और उन्होंने सिन्धु नदी के किनारे से देश में प्रवेश किया। वे सभी स को ह बोलते थे इस कारण अग्रेजों

ने इस देश का नाम हिंदुस्तान रख दिया। जब हमारा देश आजाद हुआ तब पुन: देश के वरिष्ठ नेतागणों ने विचार विमर्श किया कि अब हमें अपने देश का क्या नाम रखना चाहिए तो उस समय किसी ने कहा- इण्डिया रखा जाये किसी ने कहा- हिन्दुस्तान रखना चाहिए लेकिन महात्मागांधी जी ने खार बेल की गुफाओं में प्रशस्तियाँ देखी और वहां भारत देश नाम लिखा था उन्होंने उसकी फोटू निकलवाकर समस्त नेताओं के सन्मुख रख दी और कहा- हमारे देश का पुराना नाम भारत था और यह आज का नहीं वर्षों प्राचीन है। महात्मागांधी जी की बात सुन सारी सभा में तालियाँ बज गई और सभी ने सहर्ष समर्थन किया कि देश का नाम भारत ही रखा जाये ओर आज तक हमारे देश का नाम भारत ही चला आ रहा है।

यह देश सम्मानीय देश है अन्य देशों की अपेक्षा भारत देश को अधिक सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। भारत एक ऐसा देश है जिसे माता के नाम से पुकारा गया, आप लोग प्रतिदिन भारत माता की जय बोलते हैं। भारत के अलावा ऐसा कोई देश नहीं है जिसे माता का सम्मान मिला हो, कभी सुना अमेरिका माता, जापान माता, पकिस्तान माता, कहीं सुना आस्ट्रेलिया माता नहीं कहीं किसी देश को माता का सम्मान नहीं मिला। जो कि भारत देश का मिला है।

भारत देश में ऐसे- ऐसे महापुरुष हुए जिनका आर्दश आज तक इतिहास भुला नहीं सका है। यहाँ ऐसे पितृ भक्त हुए जिन्होंने अपने अन्धे माता-पिता को कंधो पर लेकर यात्रा कराई, क्या अन्य किसी देश में ऐसा सपूत हुआ, ऐसा लाल हुआ, नहीं विदेश के लोगों ने माता-पिता को यात्रा कराना ता दूर उन्हें वृद्धाश्रम में भेजा है। हमारे देश में पुरुषोत्तम राम जैसे व्यक्ति हुए जिन्होंने अपने पिता की आन-वान-शान के खातिर राज्य को तिलाञ्जलि दे १४ वर्ष का वनवास स्वीकार किया था। विदेशों में आज तक कोई ऐसा व्यक्ति नहीं हो पाया जिसने पिता की लाज के लिए कुर्सी ठुकराई हो, राज्य सिंहासन छोड़ा हों, जंगलों को अंगीकार किया हो।

बन्धुओ! यह एक ऐसा देश है जिस देश में जन्म लेने वाली बालिकाओं ने अपने पिता का सिर न झुकने देने के कारण जीवन पर्यन्त का ब्रह्मचर्यव्रत धारण किया था वे ऋषभनाथ की पुत्री ब्राह्मी, सुन्दरी थी। ऐसी पुत्री कहीं किसी देश में नहीं जन्मी। भारत देश की गरिमा को बढ़ाने वाले अनेक ऐसे उदाहरण हमारे साहित्यों में भरे हुए हैं।

एक और घटना को चार पंक्तियों में माध्यम से हम समझें-

सड़क पर पड़ा था कौन था विचारा
बहुत दिनों से भूखा था
दुनियाँ से जब सिधारा
कुर्ता उठाकर के देखा गया
तो पेट पर लिखा था
सारे जहाँ से अच्छा हिदुस्तान हमारा।

मरते-मरते दम तक हमारे भारतियों ने प्राण दिये पर हमारे हिन्दुस्तान के गौरव को निरन्तर बढ़ाया और विकसित किया है। हम जिस देश की धरती पर जी रहे हैं उस धरती के सम्मान को बढ़ाना और विकसित किया है। हम जिस देश की धरती पर जी रहे हैं उस धरती के सम्मान को बढ़ाना हमारा मौलिक अधिकार है।

स्वतंत्रता दिवस आज केवल मनुष्य की स्वतंत्रता बना हुआ है। ध्यान दीजिए हमारे देश में पशु भी रहते हैं पक्षी भी इस धरती पर रहते हैं उन्हें भी स्वतंत्रता का अधिकार होना चाहिए। प्राचीन समय में कृष्ण की जो गाय पूजी जाती थी। आज वह संकट में आ गई है वह पुकार रही है हे कृष्ण आओ मेरी रक्षा करो। मुझे चारा, भूषा तो नहीं अपितु मेरी गर्दन पर छुरी चलाई जा रही है।

बन्धुओ! शिव का नन्दी, ऋषभ देव का बैल चीख रहा है कि मेरी रक्षा करो। ध्यान रहे कृष्ण अब वापिस नहीं आयेंगे लेकिन कृष्ण के भक्तों में ऋषभदेव और शिव के भक्तों में यदि सच्ची भक्ति है तो तुम्हें ही शिव, ऋषभदेव और

श्रीकृष्ण बनना पड़ेगा और जब ऐसा कुछ पुरुषार्थ होगा तो मैं मानूँगा कि आप भगवान के सच्चे भक्त हैं। यदि आज आपने कृष्ण की गाय की रक्षा की है तो कल श्रीकृष्ण भी तुम्हारी रक्षा के लिए दौड़े-दौड़े आयेगे। यदि शिव के नंदी को तुमने बचा लिया तो शिव भी तुम्हें बचाने आयेंगे और यदि तुम सभी की आँखों के सामने गाय, बैलों का हनन होता रहा तो वह दिन भी दूर नहीं है जब कि हमारे देश में सिर्फ बैल की फोटू रहेगी कहानी मात्र रह जायेगी कालान्तर में हमारी धरती के लोग यही कहेंगे कि हमारे देश में इस प्रकार की गाय होती थी, दूध देती थी। लोग उसका दूध पीते थे उससे छाछ, दही, मक्खन बनाते थे और घी निकालते थे। ऐसी मात्र कहानियाँ रह जायेगी।

देश की स्वतंत्रता के दिन मैं कहना चाहता हूँ कि- हमारे देश में अब कोई इतना गरीब नहीं है भिखारी के भी घर में टी.वी. और जेब में मोबाइल रहता है तो मुझे लगता है कि अब देश में कहीं गरीबी नहीं है। मोदी और योगी की, किसी की भी सरकार क्यों न हो सभी ने देश का हित सोचा है गरीब बच्चों को फ्री में पढ़ाई, नास्ता, भोजन दे रहे हैं पुस्तक, लाइट छात्रवृत्ति आदि तरह तरह की सुविधाएँ जुटा रहे हैं और यदि ऐसा ही रहा तो मुझे विश्वास है कि आने वाले दिनों में गरीबी की रेखा पूर्णत: समाप्त हो जायेगी। आज ही हमारा देश गरीबी की रेखा से बहुत ऊँचा उठ गया है अमीर देशों में गणना प्रारंभ हो चुकी है और विश्व के अमीर देशों में चौथे नम्बर पर हमारा देश माना जा रहा है।

आज मैं केवल यही कहूँगा कि यह स्वतंत्रता मात्र मनुष्यों में ही न रहे। पशु-पक्षियों में भी स्वतंत्रता हो ताकि वे भी कत्लखानों से आजाद हो अपना स्वतंत्रता दिवस मना सकें।

जिस प्रकार हम मनुष्य स्वतंत्रता में जीना चहते हैं उसी तरह हमारे देश के पशु-पक्षी भी स्वतंत्रता में जीना चाहते हैं उन्हें भी स्वत्रतंता दिलाई जाये इसके लिए हम सभी को जुटना पड़ेगा। जिस देश से पहले रत्न, जवाहरात बाहर भेजे जाते थे आज मांस और चमड़ा भेजा जा रहा है। घी-दूध की नदियाँ बहाने वाला देश आज खून की नदियाँ बहा रहा है उसे रोका जाये यही मेरी देश के नाम पर शुभ संदेश है।

मर्यादा में जीना मुनष्य का नैतिक व चारित्रिक उत्थान है

मुनि श्री विमर्शसागर जी

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। मनुष्य का जीवन मर्यादा की डोर से बँधा रहता है। मर्यादा विहीन मानव अपनी मनुष्यता से गिर जाता है। मर्यादा से गिरना ही मनुष्य का बौद्धिक पतन है। मर्यादा में जीना मनुष्य का नैतिक व चारित्रिक उत्थान है। अत: मानव समाज को चाहिये कि मानवीय मार्यादाओं का पालन करते हुये एक चारित्रवान, उन्नत समाज की संरचना में अपना बहुमूल्य योगदान देना सीखें।

समाज एवं परिवार में मर्यादित जीवन जीने के लिये लज्जा गुण का होना आवश्यक है। लज्जा गुण सर्वगुणों का आभूषण हे। लज्जा गुण के होने पर अन्य गुण स्वयमेव आते हैं। लज्जा गुण के खोने पर अन्य गुण स्वयमेव खो जाते हैं। लज्जा गुण नर-नारी का यर्थाथ श्रृंगार है। लज्जाहीन नारी का श्रृंगार समाज के लिये कलंक का कारण बनता है। लज्जा का अर्थ है अशुभ कृत्यों से डरते रहना। लज्जा का अर्थ है शुभ कार्यों को करते रहना। जिससे परिवार में एक-दूसरे का सम्मान होता है, ऐसा लज्जा गुण सामाजिक मनुष्य की चेतना है।

वर्तमान में टी.वी. सीरियल संस्कृति के घातक हैं। टी.वी. सीरियल आज संस्कार तो कम, अनैतिकता को अधिक बढ़ावा दे रहे हैं। टी.वी. पर आते हुय विज्ञापन सात्विक गुणों पर प्रहार करने वाले हैं और बड़े दु:ख की बात तो ये है, कि बुजुर्ग लोग अपने बच्चों को समझाने की बजाय उनके साथ बैठकर सीरियल देखते हैं, तो सम्मान ओर मर्यादायें स्वयं ही समाप्त हो जाती हैं। भगवान राम महावीर के आदर्श आज उतने ही प्रासंगिक हैं जितने पहले थे। हमें चारित्रवान महापुरुषों के आदर्श जीवन को अपने आचरण में उतारना चाहिये।

(निर्वाण दिवस, मोक्ष सप्तमी)

बैर-विरोध की नहीं समता की जीत होती है

प्रवचन- प.पू. राष्ट्रसंत, सूरि गच्छाचार्य, गणाचार्य श्री १०८ विरागसागर जी महाराज

एक ऐसा व्यक्तित्व जिनके जीवन में संघर्षों की अविरल श्रृंखला चलती रही। एक ऐसा व्यक्तित्व जिन्होंने स्वयं काँटों पर चलकर भी दुनियाँ को फूल वाटे हैं। एक ऐसा व्यक्तित्व जो समता सरलता और साधना की जीती जागती प्रतिमा था।

बन्धुओ! यूँ तो समता शब्द कहना बहुत आसान है। आम व्यक्ति कह देता है समता से रहना चाहिए अथवा हम समता से रहते हैं। किन्तु समता कहना जितना आसान है समता में रहना, उसे धारण करना उतना ही कठिन है। जब तक सामने वाले अनुकूल है सारी व्यवस्था हमारे अनुकूल बनती है तब तक लगता है हम तो समता में रहते हैं, हमें तो कभी क्रोध आता ही नहीं है। लेकिन जिस क्षण सामने वाले प्रतिकूलता में खड़े हो जाते है, परिस्थिति हमारे प्रतिकूल बनती है, तब पता चलता है समता में रहना कितना कठिन होता है। विपरीत परिस्थिति में समता बनाना वैसा ही कठिन है जैसा की नारियल के वृक्ष पर चढ़ नारियल तोड़ना है।

आज का मानव छोटी सी बात में उत्तेजित होने लगता है किसी ने यदि कुछ कह दिया तो उसे लगता है इसका जबाव मैं कब दे दूँ और जब तक वह सामने वाले को प्रति उत्तर न दे ले तब तक उसके मन मस्तिष्क में शांति की अनुभूति नहीं हो पाती है और कषायावेग के उतने क्षणों में उसकी आकृति, मुखमुद्रा कार्य प्रणाली आदि सभी विकृति को प्राप्त हो जाती है।

बन्धुओ! आज के प्राणी में क्रूरता बढ़ती जा रही है दूसरे की वृद्धि को देख व्यक्ति को खुशी नहीं अपितु जलश होने लगी है ईर्ष्या प्रतिस्पर्धा की भावना से वह सामने वाले को भी दुखी देखना चाहता है उसी खुशियाँ भंग करना चाहता है वह सोचता है संसार में मात्र मैं ही सबसे अधिक सुखी रहूँ कोई मेरी बराबरी न कर सके किन्तु ध्यान रखना संसार की व्यवस्था किसी की भावना से नहीं चलती अन्यथा सभी लोग एक दूसरे को सुखी और दुखी कर सकते थे किन्तु ऐसा नहीं हो सकता।

संसार के जितने भी प्राणी है वे सभी अपने द्वारा किये गये कर्मों के फलों को भोगते हैं तभी तो भगवान पार्श्वनाथ प्रभु का निर्वाण हो सका।

बन्धुओ! भगवान पार्श्वनाथ ने समता को अपनी अंतर आत्मा में धारण किया था और वह भी एक भव में नहीं १० भवों का उल्लेख हमारे शास्त्रों में प्राप्त होता है- तीर्थंकर पार्श्वनाथ होने के दसवें भव पूर्व अग्निभूति और मरुभूति नाम के दो ब्राह्मण पुत्र थे दोनों का पालन माता-पिता ने अच्छी तरह किया। अंत समय दोनों पुत्रों को यथायोग्य धन सम्पदा सौपकर वे मरण को प्राप्त हुए। दोनों भाई ग्रहस्थिक जीवन यापन कर रहे थे तभी एक दिन छोटे भाई मरुभूति को किसी कार्यवश अन्य नगर जाना पड़ा इधर बड़े भाई अग्निभूति ने मरुभूति की पत्नि को अकेला देख उससे गलत कार्य करना चाहा किन्तु वह पतिव्रता स्त्री थी अत: उसने वहाँ से भागकर नगर के राजा से अग्निभूति की सारी बात कह दी। राजा ने अपराधी अग्निभूति को राज्य से निकाल दिया। जिससे दुखी होकर वह जंगलों में रहकर पंचाग्नि तप (कुतप) करने लगा। इधर जब छोटे भाई को इस बात की खबर मिली तो वह बड़े भाई के प्रेमवश पत्नि के पराभव को भूलकर अग्निभूति को मनाने पहुंचा उसने कहा- भाई सारे अपराध को क्षमा करो, घर चलो वह घर आपका ही है। मैं आपका छोटा भाई हूँ अत: मुझपर कृपा करो।

बन्धुओ! जब व्यक्ति के अंदर तीव्र कषाय का प्रादुर्भाव होता है तो उसे किसी की बात अच्छी नहीं लगती अथवा यूँ कहें अच्छी बात करने वाला भी उसे शत्रु की तरह नजर आता है। छोटे भाई के क्षमा मांगने पर भी अग्निभूति का क्रोध शांत नहीं हुआ। अपितु वह और भी अधिक भड़क उठा, उसने सोचा इस मरुभूति के कारण ही मुझे नगर से निकाला गया है। अत: यही मेरा दुश्मन है मैं इसी का काम तमाम किये देता हूँ। ऐसा सोच जिस पत्थर की बड़ी शिला को दोनों हाथों से ऊपर उठाकर वह तप कर रहा था वही भारी-भरकम पत्थर की शिला अग्निभूति ने मरुभूति के ऊपर पटक दी। शिला के गिरने से संक्लेशित परिणामों से तड़फ-तड़फ कर मरुभूति की मृत्यु हो गई और वह उसी जंगल में हाथी हो गया। अग्निभूति का जीव भी उसी वन में सर्प हुआ पूर्व बैर बशात् सर्प ने हाथी को काट लिया। जिससे हाथी की मृत्यु हो गई इसी प्रकार कभी तिर्यंञ्च कभी नरक, कभी मनुष्य तो कभी देव पर्यायों में दोनों का जन्म मरण चलता रहा। विशेषता यह रही मरुभूति के जीव ने बैरभाव नहीं रखा अपितु किया गया उपद्रव शांतभाव से सहन किया जिसके फल स्वरूप वे स्वर्ग के देव तथा मनुष्यों में राजा बन सुखों को भोगते रहे और अग्निभूति के जीव ने मरुभूति से बैर-विरोध के भाव रखे जिसके कारण उसे नरक तिर्यञ्च के दुखों को भोगना पड़ा।

मरुभूति का जीव अनेक भवों में की गई रत्नत्रय की साधना के असीम पुण्य से जब तीर्थंकर पार्श्वनाथ के भव को प्राप्त

हुए उस समय अग्निभूति का जीव कमठ नाम का भवनवासी असुर हुआ और जब भगवान पार्श्वनाथ ने तपस्या प्रारंभ की तो कमठ ने उनके ऊपर घनघोर उपसर्ग करना प्रारंभ कर दिया।

बन्धुओ! भगवान पार्श्वनाथ की निर्दोषता और समता से सभी परिचित है और कमठ के उपद्रव को भी सभी समझते है फिर भी उपसर्ग के समय कोई कुछ नहीं कर सका। एक तीर्थंकर भगवान जिनकी सेवा गर्भ में आने के ६ माह पूर्व से ही देवगण करते है उनके ऊपर घनघोर अग्नि बरसती रही, पत्थर ओले-सोले बरसे लेकिन किसी को खबर तक नहीं मिली अथवा यह भी सत्य सिद्धान्त है कि जब तक कर्मों का तीव्र उदय होता है तब तक कोई दूसरा कुछ भी नहीं कर पाता लेकिन यह भी सिद्धान्त है कि जीत सदैव सत्य की ही होती है झूठ अपनी कितनी ही शक्ति जुटा ले कितने ही झुठे सबूत खड़े कर ले लेकिन अंत में उसे सत्य के सामने झुकना ही पड़ता है।

बन्धुओ! कभी-कभी व्यक्ति चोरी पर भी सीना जोरी करने लगता है तब मुझे लगता है कि संसार में कैसी विचित्रता है। व्यक्ति स्वयं अपने कर्तव्यों से भ्रष्ट होता है अनुशासन, आज्ञा का पालन नहीं करता है धर्म पथ पर आकर भी धर्माचरण छोड़ संसार की चकाचोध में भटक जाता है फिर यदि कोई समझाये तो उल्टा उन पर हावी होता है उनकी बात मानना तो दूर उन्हीं पर अपशब्दों की बोछार, अनुचित शब्दों की छीटा कसी करना प्रारंभ करता है और जब इससे भी शांति नहीं मिलती तो और भी घिनौने कृत्य करने तैयार हो जाता है।

पर ध्यान रहे सत्य, सत्य ही रहेगा उस पर कितना भी झूठ का कचड़ा फैका जाये लेकिन सत्य कभी धूमिल नहीं हो सकता है अत: सत्य को झूठ साबित करने वाले ध्यान रखें वे किसी और का नहीं स्वयं का ही अहित कर रहे हैं। स्वयं ही जटिल कर्मों को बांध रहे हैं तथा नरक, निगोद में जाने की बुकिंग कर रहे हैं।

आज भगवान पार्श्वनाथ की निर्वाण दिवस (मोक्ष सप्तमी) यही संदेश दे रहा है कि भगवान पार्श्वनाथ संघर्षों में जीकर भी सत्यता पर चलते रहे तो उपसर्गों में भी उन्हें केवल ज्ञान हो गया और उन पर उपसर्ग करने वाले असत्य कमठ का नरकों में पतन होता रहा। अत: सदैव सत्य पर अटल रहें।

दूसरी-विशेष बात यह भी है कि उपसर्ग दूर करने की याद भी सबसे पहले धरणेन्द्र और पद्मावती को आई क्योंकि पार्श्वनाथ भगवान ने णमोकार मंत्र सुनाकर उन पर उपकार किया था। यह सर्व विदित है कि जो दूसरों का भला करता है उसका भी भला होता है अत: हमें सदैव दूसरों की सहायता दीन दुखियों की सेवा करते रहना चाहिए।

आज की यह मोक्ष सप्तमी हमें बहुत सारी शिक्षा देने आई है हम उस शिक्षा को ग्रहण करे जीवन में उतारे तभी यह निर्वाण दिवस मनाना सार्थक हो सकेगा।

हर वर्ष मोक्ष सप्तमी पर सम्मेद शिखर जी की रचना की जाती थी किन्तु आज साक्षात् सम्मेद शिखर के स्वर्णभद्र टोंक पर निर्वाण लाडू चढ़ाने का यह सौभाग्य, भक्ति का यह पवित्र माहोल बड़ा ही मन मोहक लग रहा हैं। हम सभी भी भगवान के चरणों में प्रार्थना करते हैं हे प्रभु हम भी आप जैसे मोक्ष पद को प्राप्त कर सकें।

इसी भावना के साथ- ।। जय बोलिए पार्श्वनाथ भगवान की जय।।

सूर्योदय के पूर्व उठें

- ❖ सूर्योदय से २ घंटे पूर्व का काल ब्रह्म मुहूर्त कहलाता है।
- ❖ इस काल में वृक्ष ऑक्सीजन छोड़ना प्रारंभ करते हैं। जिससे पर्यावरण शुद्ध होता है।
- ❖ ऑक्सीजन हमारी प्राण वायु है।
- ❖ रात्रि में कलकारखानें व वाहनों से उत्पन्न होने वाला प्रदूषिण वातावरण भी कम होता है।
- ❖ सूर्योदय के पूर्व उठने से हमें शुद्ध पर्यावरण प्राप्त होता है जिससे आयु, आरोग्य एवं बुद्धि का विकास होता है, उसमें विशुद्धि आती है।
- ❖ शारीरिक तथा मानसिक स्फूर्ति आती है।
- ❖ मानसिक तनाव घटता है तथा शांति का निर्माण होता है।
- ❖ इस समय की गई भगवत् भक्ति में तथा अध्ययन में शत गुना फल मिलता है।

संस्कार सुरभि के साभार से

धर्म और धर्मात्मा की रक्षा का पर्व रक्षा बंधन

प्रवचन- परम पूज्य राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री १०८ विरागसागर जी गुरुदेव

बन्धुओ! रक्षा बंधन का दिन प्राचीन इतिहास का साक्षी बनकर आया है। आज का दिन एक ओर हमे सहन-शीलता का पाठ पढ़ाता है तो दूसरी और वात्सल्यता का और व्यवहार का मार्ग बतलाता है। आज के दिन ही ग्यारहवे तीर्थंकर श्रेयांसनाथ भगवान का मोक्ष हुआ था इसलिए यह निर्वाण कल्याणक का दिन भी है और आज के ही दिन अकंपनाचार्य आदि ७०० मुनिराजों का उपसर्ग दूर हुआ था इसलिए वात्सल्य पर्व का भी दिन है।

संसार में समय-समय पर अनेकों घटनाएँ घटती रहती है लेकिन वे बहुत बड़ी शिक्षा देकर जाती हैं। यूँ तो भारत देश पर्व प्रधान देश है, धर्म प्रधान और संत, महात्मा प्रधान देश है। यहाँ पर अनेकों ऋषि-मुनियों ने अपनी साधना का शंखनाद किया, अपनी तपस्या का शंखनाद किया अपने वात्सल्य का शंखनाद कर प्राणियों को संसार में जीने की कला सिखाई है। हमें जीवन जीने का तरीका बतलाया है।

बन्धुओ! यदि हम आज के दिन के पुराने इतिहास को देखें तो २०वें तीर्थंकर मुनिसुव्रत नाथ भगवान के समय की यह घटना है जो आज से लगभग १८,९२,९६२ वर्ष प्राचीन है।

जिस समय अवंतिदेश की उज्जैनी नगरी में राजा श्रीवर्मा अपनी प्रजा का लालन पालन कर रहे थे। उनके चार मंत्री थे बलि, प्रहलाद, नमुचि और ब्रहस्पति। राजा अत्यंत धार्मिक सम्यग्दृष्टि थे लेकिन मंत्रीगण मास्तिक और मिथ्यादृष्टि थे किन्तु यह बात किसी को पता न थी कि कौन कितना धर्मात्मा और आस्तिक्य एवं नास्तिक्य है।

बन्धुओ! श्रद्धा आँखों का विषय नहीं होती वह तो हृदय का धर्मसूत्र होता है। किसी के मन को जानना आसान नहीं होता है यही कारण था कि वे सभी एक दूसरे की धार्मिकता से अनभिज्ञ थे। एक समय उसी उज्जैनी नगरी में अकम्पनाचार्य आदि ७०० मुनियों का पदार्पण हुआ। मुनि आगमन से सारे नगर में असीम खुशी थी। सारे नगरवासी हर्षोल्लास से मुनियों की सेवा-भक्ति आहारदान आदि में तल्लीन थे। तभी प्रात:काल की मंगल बेला में वनमाली ने षटऋतुओं के फल-फूल लाकर राजा को भेट किये और कहा- महराज यह अद्यान में पधारने वाले निर्ग्रन्थ तपोधन अकंपनाचार्य आदि ७०० मुनियों की साधना का अतिशय है। राजा श्रीवर्मा ने ज्यों ही मुनि आगमन की खबर सुनी वह तुरन्त अपने सिंहासन से सात पैर आगे बढ़कर वहीं से मुनि चरणों में साष्टाङ्ग नमस्कार करता है। मंत्रियों से कहता है कि जाओ समग्र नगरी में मुनि दर्शनार्थ चलने की भेरी बजबा दो।

आदेश सुन मंत्रीगणों ने कहा- राजन क्या आप भी अंधीप्रजा की तरह दौड़ना चाहते हैं वे नंगे साधु भला क्या देगे? मंत्रियों की बात सुन राजा ने कहा- मंत्रियों व्यर्थ की बात मत करो, अपने अंदर श्रद्धा-भक्ति का दीप जलाओ और शीघ्रता करो। राजा आज्ञा कौन टाल सकता है सभी मंत्री राजा के साथ उद्यान में मुनिदर्शनार्थ राजा के साथ प्रस्थान करते है।

इधर अकंपनाचार्य निमित्त ज्ञानी थे उन्हें पूर्व से ही चारों मंत्रियों की छवि झलक गई और उन्होंने सोचा कि आज संघ पर कोई न कोई विपत्ति आने की संभावना है अत: उन्होंने सभी साधुओं को मौन धारण कर ध्यान करने का आदेश दे दिया।

बन्धुओ! गुरु ही इन सारे रहस्यों को जान सकते हैं उनके हर विचार में गहराई होती है वे दूर दृष्टा होते हैं और आखिर क्यों न हों जो इतने साधुओं के गुरु हों, ध्यान रखो हर साधक की साधना का १०% पुण्य गुरु के हिस्से में आता है इसलिए सर्वाधिक वे पुण्यशाली होते हैं। आचार्यों के गुणों में ज्येष्ठत्व गुण कहा गया है प्रत्येक गुण में अन्य साधुओं से उनमें विशेषता होती है, वरिष्ठता होती है। वे केवल नाम के गुरु नहीं गुणों से भी गुरु होते हैं।

अकंपनाचार्य का आदेश पाते ही शिष्यगण मौन हो गये कहा भी है-

शिष्यास्ते त्र पशस्यते ये कुर्वंति गुरुवचः।
प्रीतिती विनयोपेता भवन्त्यन्ये कुपुत्रवत्।।

इस जगत में वे ही शिष्य प्रशंसनीय होते हैं जो गुरु के वचन को बिना तर्क, बिना शर्त के स्वीकार करते हैं और उनकी आज्ञा को पालन करने में अपना अहोभाग्य मानते हैं और इससे विपरीत चलने वाले, शिष्य कुपुत्र की तरह माने गये हैं। वे शिष्य नहीं कुशिष्य होते है।

परम पूज्य अकंपनाचार्य महाराज के शिष्यों में गुरु भक्ति भरी हुई थी। अत: उन्होंने गुरु आज्ञा का शब्दश: पालन किया। इधर राजा दर्शनार्थ आया मुनियों को ध्यानस्थ देख उसकी श्रद्धा द्विगुणित हो गई, उसने सोचा, वीतरागी संतों के लिए तो राजा और रंक सभी समान होते हैं। ध्यानादि अवस्था में वे किसी के आने पर ध्यान आसन नहीं छोड़ते हैं। आज तो इन वीतरागियों के दर्शन कर मन प्रसन्न हो गया। लेकिन मंत्री गणों का क्रोध उत्तेजित होने लगा लौटते समय उन्होंने राजा से कहा- हे राजन! आप उन्हें वीतरागी कहते हैं लेकिन मुझे तो वह मुर्खों की टोली लगती है। इतने बड़े राजा आये लेकिन सभी के सभी इतने डरे भरे बैठे थे न तो किसी ने आँखे खोली न हाथ उठाकर आशीर्वाद दिया। उनके अंदर में बिल्कुल भी विवेक नहीं था। यदि राजा के आने पर थोड़ी सी प्रसन्नता बरसा देते तो क्या उनका कुछ बिगड़ जाता लगता है वे सभी मूर्ख ही थे। इस प्रकार की चर्चा मंत्रीगणों की चल ही रही थी कि राजा ने कहा- हे मंत्रियों तुम जैसे प्राणियों को इतने उच्च पद पर होकर यह भाषा शोभा नहीं देती है। अपनी दृष्टि को विशाल बनाओ। साधुओं के पवित्र दर्शन तुम्हें प्राप्त हुए लेकिन तुमने कुछ भी पुण्य लाभ नहीं ले पाया। मंत्रियों ने कहा- नहीं-नहीं हम वंचित नहीं रहे वहाँ मिलता भी क्या है उनके पास था ही क्या आदि वार्ता करते हुए जा रहे थे। इतने में ही सामने से निर्ग्रन्थ दिगम्बर मुनि श्रुतसागर जी आहार करके आ रहे थे। उन्हें गुरु आज्ञा का कुछ भी भान नहीं था, उन्होंने मंत्रियों की चर्चा से ही जान लिया। ये मिथ्यादृष्टि है अब इनके मन में भी सम्यग्ज्ञान का दीप जलाना चाहिए।

मंत्रियों ने जैसे ही उन्हें देखा वैसे ही राजा से कहा- पश्य, पश्य राजन एको अयं वरदा तक पीतो आगत: (एक यह बैल देखों छाछ पीकर चला आ रहा है) बन्धुओ! पीतो तर्क आगत: शब्द मुनि के कान में पड़ा तो उन्होंने सोचा यह अच्छा अवसर इन्हें समझाने का आया है इन्हें अवश्य समझाता हूँ। वे बोले- भो मंत्री तक्र: पीत: नस्ति श्वेता: भवति (छाछ पीली नहीं सफेद होती है) यस्य नेत्रे: कावला रोग भवति तस्येव श्वेत तक्र: पीत: दृश्यति (जिसके नेत्र में काबला रोग हो जाता है उसे सफेद छाछ भी पीली दिखने लगती हैं) शब्द सुनते ही मंत्रीगण चौक गये उन्होंने शास्त्रार्थ प्रारंभ कर दिया। श्रुतसागर महाराज भी पीछे न रहे उन्होंने अपनी पैनी प्रज्ञा से सभी को कुछ ही क्षण में निरुत्तर कर दिया। पराजित होकर वे नगर चले गये। इधर श्रुतसागर जी ने आते ही सारी बात गुरु से निवेदित की ओर कहा- मैं मंत्रियों से शास्त्रार्थ में विजय प्राप्त कर आया हूँ।

उनकी बात सुन अकंपनाचार्य ने कहा- हे शिष्य! तुमने य अच्छा कार्य नहीं किया। इससे सारे संघ पर विपत्ति का संकेत और अधिक बढ़ गया। तीव्र मिथ्यात्व के उदय में किसी को समझाना संभव नहीं है। जलती हुई तीव्र अग्नि में थोड़ा सा पानी बुझाने का नहीं उसे और भवकाने का कार्य करता है। तुमने संघ पर संकट खड़ा कर दिया है। बात सुनते ही श्रुतसागर जी की आँखे सजल हो गई अश्रुधारा प्रवाहित करते हुए उन्होंने कहा- हे गुरुदेव! इस गल्ति को माफ कीजिए और आज्ञा दीजिए मैं इस संकट का निवारण कर सकूँ। अकंपनाचार्य बोले- जाओ जहाँ शास्त्रार्थ हुआ था उसी स्थान पर खड़गासन से ध्यानस्थ हो जाओ।

गुरु आज्ञा गरीयसी मानते हुए वे उसी ध्यान पर ध्यानस्थ हो गये। इधर चारों मंत्रियों ने अपमान का बदला लेने की योजना बनाई और रात्रि के समय उन मुनियों का संहार करने के लिए चमचमाती तलवार लेकर वन की ओर बढ़े। कुछ ही दूर पर उन्हें श्रुतसागर जी मुनिराज दिखे, जिन्हें देखते ही वे प्रसन्न हो गये बोले यही तो अपे अपमान को करने वाला था पहले इसी का काम तमाम करें।

बन्धुओ! उन तीव्र मिथ्यादृष्टियों को भी यति हत्या से घबराहट हुई। उन्हें पता था यति हत्या का कोई प्रायश्चित नहीं होता है। अत: वे एक दूसरे से कहते हैं पहले तुम बार करो, पहले तुम बार करों, अंत में सलाह कर चारों ने एक साथ तलवार का बार किया। लेकिन यह भी सत्य है जिसका कोई नहीं होता उसका भाग्य ही सबसे बड़ा देवता बन जाता है और कोई न कोई अवश्य उनकी रक्षा करता है। निरपराधी मुनि की हत्या करते देख नगर देवता ने उन चारों मंत्रियों को उसी हालत में कील दिया जिससे वे न बोल ही पा रहे थे न हाथ पैर ही हिला पा रहे थे मात्र मूर्ति की तरह खड़े ही रह गये। प्रात: होते ही इस दृश्य को देखकर नगर बासियों ने मंत्रियों को धिक्कारा, राजा ने काला मुख कर उन्हें देश निकाला दे दिया।

वे मंत्री घूमते-घूमते हस्तिनापुर नगर में पहुंचे वहाँ के राजा पद्म अत्यंत छोटी वय के और नये थे जिससे पास का शत्रुराजा सिंहबल उन्हें परेशान करता था। यद्यपि यह राज्य अत्यंत बलवान महापद्म राजा का था उन्होंने वृद्धावस्था में अपने ज्येष्ठ पुत्र विष्णुकुमार को राज्य देना चाहा किन्तु वैरागी विष्णुकुमार ने राज्य स्वीकृत व कर निग्रन्थ दीक्षा की अनुमति मांगी। तब महापद्म ने अपने छोटे बेटे पद्म को राज्य देकर विष्णुकुमार के साथ दीक्षा ग्रहण कर ली। राजा पद्म को युद्ध में सक्षम न जान शुत्रु राजा उनके राज्य पर उपद्रव करता रहता था किन्तु उन चारों मंत्रियों ने अपनी चतुराई से उसे बंधी बना पद्म के चरणों में डाल दिया। जिससे खुश होकर नवीन राजा पद्म ने उन्हें अपने मंत्रीपद के साथ मुख मांगा वरदान देना स्वीकृत कर लिया।

कालान्तर में उन्हीं अकंपनाचार्य आदि ७०० मुनियों का संघ हस्तिनापुर में आया। जिनके दर्शन वंदन से भक्तों के मन मयूर नाच उठे। उसी वक्त मंत्रियों ने अपने अपमान का बदला लेने हेतु राजा से मुख मांगे वरदान में सात दिन का राज्य मांग लिया। यद्यपि राजा को कुछ अनिष्ट की आशंका हुई किन्तु वचनवद्ध होने से वह चारों मंत्रियों को राजा बना स्वयं अपने राज महल में रहने लगे। राज्य पाते ही मंत्रियों ने मुनियों के चारों और सूखी लकड़ी, सड़ी-गली दुर्गन्धित वस्तु को डलवाकर उसमें अग्नि प्रज्वलित करवा दी और नगर में नरमेघ यज्ञ की घोषणा करा सभी को आमंत्रित करने लगे। चतुर्दशी की शाम का वह दिन था जब चारों ओर के गुरुभक्त इस भयावह उपसर्ग को देख दुखित हृदय हो अश्रुधारा वहा रहे थे किन्तु राजा के सामने कोई कुछ भी नहीं कर पा रहा था।

उसी समय मिथिला नगरी में सागर सेन नाम के आचार्य साधनारत थे अचानक उनकी दृष्टि आकाश की ओर पहुंची तो उन्होंने कम्पायान श्रवण नक्षत्र को देख अवधिज्ञान से ७०० मुनियों पर होने वाले उस उपसर्ग को जान लिया। उस समय इस असीम दुख के कारण असमय में ही उनके मुख से आह! की आवाज निकल गई। बन्धुओ! दयामूर्ति, करुणामूर्ति साधुजन अन्य साधु के उपर आये उपसर्ग को कैसे सह सकते हैं। गुरु के मुख से उस आवाज को सुन पास में ही बैठे हुए पुष्पदंत नाम के क्षुल्लक पूछ बैठे- गुरुदेव क्या कष्ट है रात्रि में आपके मुख से यह खेद भरी आवाज अचानक क्यों निकली? तब सागर सेन ने उपसर्ग की बात बतलाते हुए कहा- जाओ इस उपसर्गको दूर करने हेतु विष्णुकुमार के पास जाओ उन्हें विक्रिया ऋद्धि सिद्ध हो गई है। जिससे इस उपसर्ग को दूर करने में वे समर्थ है। वे क्षुल्लक तुरन्त धरणीधर पर्वत पर ध्यानस्थ विष्णुकुमार मुनिराज के पास पहुँच गये और उनसे प्रार्थना की भगवन् ७०० मुनिराजों की रक्षा कीजिए। घनघोर उपसर्ग को दूर कीजिए जब ये शब्द उनके कान में पड़ेतो विष्णुकुमार मुनिराज का भी ध्यान सहसा टूट गया। उन्होंने अपना ध्यान विसर्जन कर पूछा- किस पर उपसर्ग, कैसा उपसर्ग? क्षुल्लक जी ने कहा- हस्तिनापुर में ७०० मुनियों पर घनघोर उपसर्ग हो रहा है। गुरु ने कहा है आपको विक्रिया ऋद्धि-सिद्ध हो गई है जिससे आप ही उपगर्स को दूर करने में समर्थ है।

विष्णु कुमार ने अपनी लघुता प्रकट करते हुए कहा- मेरी इतनी साधनाकहाँ कि मुझे सिद्धियों हो जायें लेकिन गुरु आज्ञा थी अत: उन्होंने परीक्षार्थ अपना हाथ फैलाया तो वह हाथ सुमेरु पर्वत तक जा पहुँचा जिससे उन्हें निश्चय हो गया कि वास्तव में मुझे विक्रिया ऋद्धि सिद्ध हो गई है। उसी रात्रि में वे तुरन्त राजा पद्म के पास पहुंचे और उन्हें ललकारते हुए बोले पद्म तू ने इस पवित्र वंश को कलंकित करने वाला कार्य कैसे आरंभ कर दिया है। राजा पद्म तुरंत हाथ जोड़कर बोला स्वामिन मैं लाचार हूँ मुझे नहीं पता था कि मेरे राज्य में इतना घिनौना कृत्य होगा मैं मंत्रियों को वरदान में सात दिन का राज्य दे चुका हूँ। बात को सुनते ही मुनि रक्षा की प्रबल भावना से विष्णुकुमार ने अपना रूप बदल लिया और मंत्रियों को सबक सिखाने के लिए ५२ अंगुल विप्र का रूप धारण किया, लक्ष्मी चोटी गले में मालायें वेद पुराणों के मंत्रोच्चारण करते हुए उस यज्ञ भूमि में जा पहुँचे।

वावन अंगुल का विप्र यज्ञ में शुभ माना जाता है अत: उन्हें देखते ही चारों मंत्री दौड़ पड़े विप्र जी आईये स्वागतम-३ यज्ञ में शामिल होने की कृपा करें। विप्र रूप धारी विष्णुकुमार ने कहा- हे मंत्रियों यह ऐसा वैसा विप्र नहीं, विप्राधिपति है। कार्य के पूर्व दक्षिणा लेता है। मंत्रियों ने कहा- हाँ-हाँ बोलिए क्या चाहिए आपके मुंह मांगा वरदान मिलेगा विप्र ने कहा- मात्र तीन पग भूमि वह भी अपने पैरो से। मंत्रियों ने परिहास करते हुए कहा- तू शरीर से ही छोटा नहीं लगता है तेरी

बुद्धि भी छोटी है। विप्र ने कहा- व्यर्थ का वकवाश मत करो वरदान देना है तो जलाञ्जलि दीजिए। मंत्रियों ने हाथ में जल ले वरदान को स्वीकृति दी। वरदान मिलते ही विप्र भेषधारी विष्णुकुमार ने अपने शरीर को विस्तृत कर लिया और तत्क्षण एक पैर में सुमेरु पर्वत और दूसरे पैरमें मानुषोत्तर पर्वत को नाप लिया सारी सृष्टि नप गई अब तीसरा पैर रखने स्थान ही नहीं था तब उन्होंने तीसरे पैर रखने के लिए जगह मांगी चारों मंत्री घबराहट से कांप उठे रक्षा देही-२ कहे हुए चरणों में गिर गये, दिये हुए वचन की पूर्ति करने हेतु उन्हें कहना पड़ा तीसरा पैर मुझ पापी की पीठ पर रख दीजिए। मुनि अपमान के आवेग में विष्णुकुमार ने उनकी पीठ पर पैर रख दिया यद्यपि उन्होंने करूणा भाव से हल्का पैर रखा था किन्तु मंत्री घबरा उठा और उसने उनकी स्तुति करते हुए प्राण भिक्षा मांगी और क्षमा मांगते हुए कहा- स्वामी मुझे क्षमा कीजिए मुझे नहीं मालूम था निर्ग्रन्थ संतों के अपमान का ऐसा दुस्परिणाम प्राप्त होगा, मैं वचन हार गया अब आप जो कहेंगे वही होगा।

विष्णुकुमार ने कहा- उपसर्ग दूर किया जाये तत्क्षण उपसर्ग दूर हुआ चारों दिशायें हर्ष से झूम उठी आकाश में देवाङ्गनाथ नृत्य करती हुई पुष्पवृष्टि करने लगी। धर्म की जय जयकारों से दिशायें गुंजायमान हो गई। हस्तिनापुर में उस समय ३००० घर की समाज थी। घर-घर चौके लगे सभी ने मुनिराजों को बीया की खीर का आहार कराया और धर्म रक्षा की खुशी में यज्ञोपवीत से एक दूसरे को सम्मानित किया।

बन्धुओ! उस समय यज्ञोपवीत से सम्मान करने की परम्परा थी उसी को रक्षा बंधन कहते थे। सभी परस्पर संकल्प लेते थे कि हम धर्म और धर्मात्मा की सदैव रक्षा करते रहेंगे। धागा की परम्परा काफी बाद में प्रारंभ हुई उसका उल्लेख हिमायु के समय से मिलता है। करणवती ने हिमायु के हाथ में रक्षासूत्र बांधकर रक्षा करने की प्रार्थना की। वैष्णु पुराणों में उल्लेख मिलता है लक्ष्मी ने बलि को रक्षासूत्र बांधकर रक्षा की प्रार्थना की थी। आप सभी भाई को राखी बांधते हैं और मिठाई खिलाकर इस त्योहार की रश्म को पूरा कर देते हैं पर ध्यान रखिये भाई के हाथ में राखी बांधने के साथ उन्हें यह संकल्प दिलाये कि भाई तुम अपने वंश की मर्यादा को सदैव कायम रखना ऐसा कोई काम नहीं करना जिससे परिवार वालों को नीचा देखना पड़े, कभी दुर्व्यसनों का सेवन नहीं करना तभी मैं अपनी राखी को सार्थक समझूँगी। तो इधर भाई भी एक धागा को लेकर बहिन के हाथ में बांधे और कहे बहिन मैं तेरी रक्षा करूँगा लेकिन तुम भी कभी लव मेरिज जैसे घ्रणित कार्य कर परिवार को कलंकित मत करना कभी कोई गलत कार्य नहीं करना, तो मैं मानूँगा आपका रक्षा बंधन मनाना सार्थक हो गया।

बन्धुओ! आज निरंतर बुराईयां बढ़ती जा रही हैं दुर्व्यसन प्रत्येक प्राणी पर अपनी छाप जमाते जा रहे हैं घर-घर में रावण जन्म लेते जा रहे हैं ऐसे अवसर पर आवश्यकता है राम बनने की।

आज के समय में अनेक निर्ग्रन्थ वीतरागी संत अकंपनाचार्य जैसे है जो समता से उपसर्ग सहन कर रहे हैं। बन्धुओ! रूप बदल सकता है संसार में आज भी उपसर्ग प्रारंभ है अग्नि तो कुछ ही समय में शांत हो जाती है वह एक सीकित ऐरिया तक ही रहती है किन्तु वर्तमान में उससे भी बड़ी अग्नि अवर्णवाद, झूठे दोषारोपण करने की अग्नि है जो वर्षो-वर्ष तक शांत नहीं होती है। टी.वी., वॉट्सऐप, फेसबुक, पत्र पत्रिका रूपी सड़ी गली लकड़ियों का ईंधन इसकी अग्नि को देश देशान्तरों तक फैला देता है। आज भी अकंपनाचार्य जैसे संत है। धन्य है उनकी समता जिन्होंने बिना कुछ कहे घनघोर उपसर्गों को सहन किया और कभी उपसर्ग कर्ताओं पर उपसर्ग नहीं किया।

बन्धुओ! वे चार मंत्री कोई दूसरे नहीं आज के समय में साधु-साध्वी, क्षुल्लक-क्षुल्लिकाओं, श्रावक-श्राविकाओं, विद्वानों के रूप में कुछ ऐसे भी लोग है जो अहर्निश उन मंत्रियों का कार्य कर रहे हैं। जब वॉटसेफ आदि खोला जाता है तो पता चलता है कि अंगारा कहाँ से फेका गया था किन्तु निर्ग्रन्थ वीतरागी संत अपने ऊपर आये उपसर्ग का प्रतिकार नीं करते वे समता से रहन करते हैं लेकिन यह भी ध्यान रहे उनकी वीतरागता में इतनी ताकत होती है, इतना प्रभाव होता है कि कही न कहीं से रक्षक भी जाते हैं। मुझे विश्वास है इस काल में भी एक नहीं अनेक विष्णुकुमार उत्पन्न हो रहे हैं जो निर्ग्रन्थ मुनियों की रक्षा में सदैव तत्पर रहते है। चाहे वे जैन हो अथवा अजेन सभी निर्ग्रन्थ संतों के प्रति श्रद्धा और विश्वास रखते हैं वे देखते है कि एक ओर व्यक्ति मौन है तो दूसरी ओर इतना उवाल क्यों ले रहा है। वे अपनी वुद्धि से सत्य निर्णय कर विष्णुकुमार का रूप धारण कर निर्ग्रन्थ संतों की रक्षा करते हैं।

आज के दिन आप सभी के लिए मेरा वश इतना ही कहना है कि सदैव ध्यान रखें कहीं आपकी गिनती इन चार प्रकार के मंत्रियों में न आ जाये। मैं भगवान से यही प्रार्थना करता हूँ कि अपने देश, राज्य, समाज और घर में उन चार मंत्रियों जैसा कोई भी मंत्री उत्पन्न न हो, लेकिन यदि कहीं आपको ऐसे लोग नजर आ जाये तो उनके लिए आप विष्णुकुमार बन जायें संभव है आप उसमें कामयाव न हो सकें लेकिन आपका सुप्रयास कालान्तर में उपसर्ग कर्ता में नहीं उपसर्ग हर्ता में आपकी गिनती करायेगा।

बन्धुओ! आज का रक्षा बंधन हम केवल पर्व मानकर ही न छोड़ दें आप हम अपनी अंतर आत्मा से इस संकल्प को धारण करें कि- हम कभी भी किसी भी रत्नत्रयधारी (मुनि, आर्यिका, क्षुल्लक, क्षुल्लिकादि) साधुजनों पर कभी उपसर्ग नहीं करेगे और यदि कोई कर भी रहा होगा तो हम जी जान से उसे दूर करने का प्रयत्न करेंगे। अपने धर्म की रक्षा हम करेंगे। संतों की रक्षा हम करेंगे, मुनियों की रक्षा हम करेंगे और धर्मात्मा की रक्षा हम करेंगे। हम से ही यह गिनती प्रारंभ होगी। हम कभी एक दूसरे का मुख नहीं देखेंगे कि वह कर रहा है तभी मैं करूँगा नहीं इसका प्रारंभ हम से ही हो यह संकल्प लें।

आज हम सभी धागे का सूत्र नहीं संकल्प का सूत्र बांधे धागा तुम पिच्छि से बांधोंगे मैं उसे छोड़ दूँगा क्योंकि यह बंधन का नहीं मुक्ति का रास्ता है। यदि बंधना है तो हम ऐसे संकल्प नियम से बंधे जो धागा स्थाई बंधा रहे। बाहर की राखी किसी की ८-१० दिन चलेगी, किसी की एक दो माह तक लेकिन संकल्प का धागा जिन्दगी भर तक चलेगा। आज मैं आपके सामने यह धागा लेकर आया हूँ और इसे मैं प्रत्येक हाथ में बांधना चाहता हूँ यह धर्म रक्षा के संकल्प का एक धागा है। आप सभी अपने हाथ ऊपर करके दिखा दीजिए कि धर्म और धर्मात्माओं की रक्षा का संकल्प रूपी धागा किस किस के हाथ में बंध चुका है। (पू. गरुदेव ने सभी को संकल्प दिया)।

आज मुझे लग रहा है कि यह संकल्परूपी धागा जगत में एक नया संकेत देगा। यह भी ध्यान रखिये जो धर्म की रक्षा करेगा धर्म भी उसकी रक्षा अवश्य करेंगा। अंत में आज जिनका निर्वाण हुआ ऐसे भगवान श्रेयासनाथ के चरणों में प्रार्थना करता हूँ कि हे प्रभु! संसार के सभी प्राणियों में एक ऐसा साहस दो कि वे कभी धर्म को न छोड़े तथा कभी बुराईयों की ओर उनका जीवन न जाये तभी यह रक्षा बंधन सार्थक सफल होगा।

लड्डू की तरह है गुरुदेव

श्रमण मुनि विशोकसागर जी महाराज

भव्य बन्धुओ! आज पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव में भगवान का जन्म कल्याणक और पूज्य गुरुदेव का जन्म दिवस हमें बहुत बड़ी शिक्षा प्रदान करता है।

बन्धुओ! कुछ ऐसे व्यक्ति हेाते हैं जो जन्म से महान होते हैं भगवान जन्म से तीन ज्ञान के धारी थे देवगण उनके कल्याणक मनाते हैं अत: वे जन्म से महान होते हैं। लेकिन दूसरे वो होते हैं जो जन्म से तो नहीं कर्म से पुरुषार्थ करके वे महान बनते हैं। पूज्य गुरुदेव आपके सामने विराजे हैं जो कर्म से महान है जिन्होंने अपने जीवन में इतनी त्याग-तपस्या की है। जगत के प्राणियों का इतना हित किया है जिससे गुरुदेव जगत के प्राणियों में महान बन गये हैं।

मुझे तो पूज्य गुरूदेव लड्डू की तरह नजर आते हैं। जिस प्रकार लड्डू गोल होता है उसे जहाँ से भी चखा जाए वह मीठा और स्वादिष्ट ही लगता है वैसे ही पूज्य गुरुदेव को किसी भी क्षण किसी भी रूप में देखें उनमें अच्छे ही गुण नजर आते हैं। आप सभी भिण्ड वासी तो गुरुदेव को सन् १९८८ से जानते हैं यह बरासों क्षेत्र जहाँ आज भक्तों का मेला दिख रहा है यह भी पूज्य गुरुदेव की देन हैं। ऐसे और भी अनेकों तीर्थों का पूज्य गुरुदेव ने उद्धार कराया है ऐसे पूज्य गुरुदेव के चरणों में यहीं प्रार्थना करता हूँ कि हे गुरुदेव! आप तो इतने महान बन गये और निसंदेह ही आप भविष्य में तीर्थंकर बनकर अपने साथ-साथ जगत के प्राणियों का हित करेंगे। मुझे भी ऐसा आशीर्वाद दो कि मैं भी आप जैसा महान बन सकूँ।

हिंसा से बढ़ती है हिंसा

प्रवचन- परम पूज्य राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री १०८ विरागसागर जी गुरुदेव

जीवन में हिंसा बहुत हानिकारक होती है। आज हम जिन जीवों को मारते हैं कभी न कभी किसी न किसी प्रकार वे जीव भी हमें मारेंगे। किसी जीव को मारना हिंसा है और हिंसा का परिणाम भी हिंसा ही होता है। यदि आप किसी की रक्षा करोंगे, सहायता करते हो दुख दर्द में आपने किसी को मलहम-पट्टी की है तो वो निश्चित ही वह जीव भी आपकी मलहम पट्टी के लिए तैयार रहेगा।

लवकुश जिन्हें हमारे शास्त्रों में लवणांकुश और मदणांकुश कहा जाता है सीता के दोनों पुत्र जब बहुत छोटे थे मात्र ४-५ वर्ष की उम्र होगी उस समय का उल्लेख रामायण में किया गया है कि- एक दिन सीता के साथ उनके दोनों बच्चे भी वन में चले गये उनके हाथ में छोटी सी कुल्हाड़ी थी कुछ दूर जाकर वे बच्चे किसी वृक्ष के नीचे बैठे गये सीता जी उन्हें नहीं बैठा अपना कार्य करती है लौटते समय बच्चों को देखती है कि वे नन्हे बच्चे कुल्हाड़ी से छोटे-छोटे पौधों को काट रहे हैं तो वे अपने सिर पर लिए लकड़ी के गट्ठे को नीचे रखकर उन्हें समझाती है बेटा मैं जो लकड़ी लाई हूँ वह सूखी लकड़ी है और तुम हरे पौधे को काट रहे हो तुम्हें पता है इसके अंदर भी आत्मा है। यह कुल्हाड़ी यदि कोई तुम्हारे पैर पर चलाये तो तुम्हें कैसा लगेगा? बच्चे कहते हैं, माँ बहुत दर्द होगा। सीता कहती है तो फिर हम इस वृक्ष को कुल्हाड़ी मार रहे हो उसे भी कष्ट होता है उसका धाव भी बहुत दिनों में ठीक हो पायेगा। बेटा हम दूसरों को कष्ट देते हैं तो हमें भी कष्ट मिलता है चलो इस वृक्ष से माफी मांगे हमने अज्ञानता में जो गल्ति की है अब जिंदगी में कभी ऐसा नहीं करेंगे अर्थात् पेड़-पौधों को कभी नहीं काटेंगे। इतनी अच्छी शिक्षा सीता जी ने लव-कुश के लिए दी थी। एक बार विहार के समय एक सज्जन गाड़ी से उतरे वे मुस्लिम थे किसी व्यक्ति को साथ ले, वे मेरे पास आये बोले- महाराज कल आपका प्रवचन मैंने सुना था आपने कहा था हिंसा से हिंसा होती है और रक्षा से रक्षा होती है। मैं अभी तक बकरों को मारता था। मेरे घर में एक बकरी ने दो बच्चे दिये उन बच्चों से मेरे बेटे का अधिक प्यार था। वह उनके साथ खेलता था। एक दिन मैंने उनमें से एक बच्चे को हलाल किया तो मेरा बच्चा बहुत रोया, चिल्लाया, हमारी निगाह चुकते ही मेरे छोटे से बच्चे ने वहीं शस्त्र उठा लिया। जिससे मैंने बकरे के बच्चे को हलाल किया था। शस्त्र लेकर बेटा बोला अव्वाजान मेरा बकरा चला गया। अब मुझे भी यहाँ नहीं रहना में भी इसे अपने गले में मारकर उसी बकरे के पास जाऊँगा। बच्चा बहुत जिद कर रहा था रो रहा था बड़ी मुश्किल से हमने उसके हाथ से शस्त्र छुड़ाकर उसकी रक्षा कर पायी। अब मुझे अहसास हो गया कि अपने बच्चों की तरह पशु-पक्षियों के भी बच्चे होते हैं उनको मारने पर मेरे बेटे को जब इतनी वेदना हुई तो उसकी माँ बकरी को कितनी वेदना होती होगी। अब आपके प्रवचन सुन मेरी भावना और बलवती हो गई है और मैं संकल्प लेता हूँ कि मैं कभी हिंसा नहीं करूँगा।

बन्धुओ! हिंसा करने वाला चंद दिनों में ही पाप की बहुत बड़ी गठरी को बना लेता है जिसके कारण फिर उसे न इस जन्म में शांति मिलती है न दूसरे जन्म में सुख शांति से रह पाता है अपितु एक जन्म में किये गये पाप के फल से वह अनेकों जन्मों तक दुखी रहते हुए उस पाप के फल को भोगता रहता है। अत: ख्यान रखें यदि हम अपना और अपने परिवार का जीवन सुख-शांति में देखना चाहते हैं तो हिंसा का त्याग कर प्रभु महावीर के चिर सनातन धर्म अहिंसा को अपनायें।

प.पू. आचार्य रत्न, चर्या चूड़ामणी राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज ससंघ के परिचय फोटो एवं अन्य जानकारी हेतु-

1. **www.ganacharyaviragsagar.org.**
2. **www.ganacharyaviragsagarwixsite.com/viragsagarji**
3. **Facebook : viragvani**
4. **Email : viragsagarji@gmail.com**
5. **youtube : upsargvijetaguru virag**
6. **सं. सूत्र what'sapp no 9009462216**

धर्मात्मा की हँसी: श्रमण-संस्कृति पर कलंक

(कृतिकार- आचार्य विशुद्ध सागर जी महाराज)

हे विशुद्धात्मन्! सम्यक्त्व के आठ अंगों में पांचवाँ अंग उपगूहन अथवा उपवृंहण अंग है। निज गुणों की वृद्धि करना, पर दोषों को ढँकना एवं अपने गुणों को ढँकना उपगूहन अंग है। उपगूहन अपने आप में सर्वोच्च स्थान रखता है। जिसके पास उपगूहन अंग नहीं है, उसे सम्यग्दृष्टि व जैन कहना तो दूर रहा, वह भद्र-परिणामी सदाचारी गृहस्थ भी नहीं है। वह तो भद्र मिथ्यादृष्टि भी नहीं। हे भद्र मिथ्यादृष्टि जीव! किसी भी धर्मात्मा की निन्दा/ आलोचना नहीं करना। अपने पुत्र-पुत्रियों के मिथ्या चाल-चलन क्या किसी को सुनाता है? इतना तो विवेक रखता है कि यदि अपनी सन्तान के कुमार्गीपन की चर्चा दूसरे से करेंगे तो उससे निज हँसी होगी, आखिर में सन्तान तो मेरी ही है। ऐसा भद्र मिथ्यादृष्टि जीव भी सोचता है, पर धिक्कार है उन धर्म के ठेकेदारों को जो धर्मात्माओं की कमी को छिपाना तो दूर की बात है, ईर्ष्या से भरकर पेपरों/ अखबारों में छपवा रहे हैं। सोचो, श्रमण संस्कृति का क्या होगा? अरे भैया! भगवान् समन्तभद्र स्वामी को मानते हो तो उनकी क्यों नहीं मानते हो? उन्होंने कहा है कि किसी बाल, अशक्त, अज्ञानी के द्वारा यदि कहीं चर्या में शिथिलता आ रही हो, अथवा उनकी किसी भी क्रिया से जिनधर्म की अप्रभावना हो रही हो तो उसे ढँकना, छिपा लेना, सामान्य जन में प्रचार नहीं करना, उपगूहन अंग है। जो धर्मात्मा की हँसी करता है, वह जिनधर्म की, नमोस्तु शासन की हँसी करता है और ऐसा व्यक्ति नमोस्तु शासन यानी श्रमण संस्कृति पर कलंक है। उसने अभी सत्य धर्म के स्वरूप को समझा नहीं है, कोरा धर्मात्मा कहलाने का ढोंग बना रखा है। कहता है- गलती को गलती न कहें? अरे अज्ञानी! स्व की ओर तो झांककर देख कि तू स्वयं में कितना चर्यावान, निर्दोष, दूध का धोया हुआ बैठा है? माना कि आप निर्दोष भी हैं, तो जब दूसरे के दोष देख रहे थे व दोषों का बखान कर रहे थे, उस समय तेरी ज्ञान की परिणति दोषों पर थी। उस समय तू दोषों में तन्मय है, इसलिए क्या तू उस दोष का दोषी नहीं है? ध्यान रख! जिसने चारित्र में दोष लगाया है, वह तो आलोचना/ प्रतिक्रमण करके शुद्ध हो सकता है। कुन्द-कुन्द भगवान् ने कहा- जो चारित्र से भ्रष्ट हैं, उसकी तो सिद्धि सम्भव है, पर जो दर्शन से भ्रष्ट हैं, वह भ्रष्ट ही हैं। उसकी शुद्धि सम्भव नहीं। चारित्र-भ्रष्ट निर्वाण का पात्र है, परन्तु दर्शन-भ्रष्ट की सिद्धि सम्भव नहीं है। इसलिए ध्यान रखो, जो धर्मात्मा की निन्दा करता है वह दर्शन-भ्रष्ट है, क्योंकि उसके पास उपगूहन अंग ही नहीं है। एक अंग से हीन भी व्यक्ति सर्वांग नहीं कहलाता। उसी प्रकार सम्यक्त्व के आठ अंगों में से एक अंग भी हीन है, तो वह शुद्ध सम्यम्दृष्टि नहीं कहला सकता, वह तो नीच गोत्र का बन्ध करेगा। जो गुरु व धर्म-धर्मात्मा का निन्दक है, वह व्यक्ति श्रमण, संस्कृति में जैन की सन्तान ही नहीं है। जो छोटे से बालक की भी हँसी करता है, वह किसी दूसरे के रक्त से उत्पन्न हुआ समझो, जो कि जैनत्व को लजा रहा है, चतुर्विध संघ की निन्दा करके दुर्गति का पात्र है। उपगूहन अंग का पालन तभी संभव है, जब अन्तरंग में मार्दव, आर्जव, क्षमा, सत्य धर्म होंगे। स्वाभिमान की पुष्टि के पीछे सन्त पुरुषों की निन्दा करता है। मैं ही श्रेष्ठ हूँ, इस बात की पुष्टि करना चाहता है फिर मायाजाल रचता है, और अन्य सद्पुरुषों की आलोचना प्रारंभ कर देता है? क्यों परनिन्दा कर भव-भ्रमण करना चाहता है। निन्दा की दुर्गन्ध से बच, उपगूहन की सुगन्ध को प्राप्त कर।

आवश्यक सूचना

आजीवन (ग्यारह वर्षीय) एवं त्रिवर्षीय सदस्यों को सूचित किया जाता है कि आपकी सदस्यता अवधि समाप्त हो गई है या होनेवाली है। अतः सदस्यता नवीनीकरण करा लें जिससे पत्रिका निरन्तर भेजी जा सके।

प्रबन्ध सम्पादक : विरागवाणी

जिन्दगी प्रश्न नहीं, उत्तरों का उत्तर है

आचार्य विनम्रसागर जी

हम चाहे वेद पढ़ें, चाहे कुरान पढ़ें, चाहे सिद्धान्त पढ़ें, चाहे आगम पढ़ें, चाहे कथा पढ़ें, चाहे अध्यात्म ग्रंथों को पढ़ें, यदि जीवन को नहीं पढ़ा है तो इन सभी को पढ़ना वास्तविक फलदायी नहीं बन सकता। हम अपनी बातों के प्रमाण कभी-कभी शास्त्रों में खोजने लगते हैं। शास्त्रों की बातों को अपने दिमाग में एकत्रित करके पण्डिताई का सेहरा अपने सिर पर लगाना सरल है लेकिन शास्त्रों की बातों को दरियादिली में समाना बहुत कठिन हैं। कुछ लोग शास्त्रों की बातों पर वाद विवाद करते हैं यदि सफल हो जायें तो वे अपने आपको ज्ञानी विद्वान समझते हैं। ये लोग इस बात से अनभिज्ञ हैं कि शास्त्र वाद-विवाद के लिए नहीं निर्विवाद और संवाद के लिए हैं। शास्त्र पढ़ करके समय गुजारना जीवन नहीं, जीवन को पढ़कर व समझ करके उसका उत्तर मिलाने के लिए शास्त्र हैं शास्त्र वह उत्तर माला है जिसमें जीवन के सारे प्रश्नों के उत्तर लिखे हुए हैं।

शास्त्रों की बात हो, वेद-पुराणों की हो, कुरान-गीता की हो, या उपनिषेदों की जीवन को पढ़े बिना किसी को भी नहीं समझा जा सकता। जीवन के अनुभवों का संकलन ही शास्त्र है। हम अनुभवों से वाकिफ नहीं हुए तो शास्त्र कथा की तरह सिद्ध होंगे। शास्त्र तब शस्त्र बन जाते हैं जबहम जिन्दगी को नहीं समझ पाते हैं। जिन्दगी एक है लेकिन शास्त्र अनेक हैं जिन्दगी शास्त्रों का समूह है लेकिन एक शास्त्र जिन्दगी का एक छोटा सा अंश है जिन्दगी समझने पर हम ज्ञान की पूर्णता को उपलब्ध हो सकते हैं। परन्तु शास्त्रों को पढ़ने पर पूर्ण ज्ञान नहीं पा सकते हैं। जिन्दगी कई प्रश्नों का पिण्ड है शास्त्र हैं उत्तरमाला। जिन्दगी को हल करें फिर उत्तर निकालें शास्त्रों में मिलायें यदि वह मिल जाये तो समझिये आप स्वयं ही भगवान बनेंगे अन्यथा आप भ्रमणवान ही रहेंगे। अत: हम सभी जिन्दगी का सार पायें तभी जिन्दगी की सफलता है।

सर्वोदया/ रत्नत्रय वर्धिनी टीका

प.पू. आचार्य कुन्दकुन्द देव की महान कृतियाँ बारसाणुपेक्खा एवं रयणसार पर प.पू. राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज द्वारा अत्यन्त ही सरल एवं सहज संस्कृत भाषा में हिन्दी अनुवाद सहित अनुपम टीका जो आगम, अध्यात्म एवं सिद्धान्त की प्रमाणिकता से ओत प्रोत, क्रमश: शोध पूर्ण ग्रन्थ, ११०० पृष्ठीय सर्वोदया एवं १३०० पृष्ठीय रत्नत्रय वर्धिनी- दो दो भागों में भारतीय ज्ञान पीठ से प्रकाशित हो चुकी हैं। मंदिर जी, साधु-संघों तथा विद्वानों ने स्वाध्यायार्थ स्वपर ज्ञान वृद्धि हेतु सर्वोदया टीका ४९०/-रूपये प्रत्येक भाग एवं रत्नत्रय वर्धिनी टीका ६५०/- प्रत्येक भाग के मूल्य पर विक्रय हेतु उपलब्ध है-

प्राप्ति स्थान-

१. **भारतीय ज्ञान पीठ (विक्रय केन्द्र)**
४४०५/५ अंसारी रोड, दरियागंज नई दिल्ली
फोन नं. ९१-०११-२३२४१६१९

२. **श्री सम्यग्ज्ञान विराग विद्यापीठ**
चैत्यालय मंदिर बतासा बाजार, भिण्ड (म.प्र.)
सं.सूत्र पं. वीरेन्द्र जैन, भिण्ड मो.९७५४८०३२२०

३. **श्री दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र विरागोदय धर्मधाम,**
पथरिया, जिला- दमोह (म.प्र.)
सं. सूत्र कपिल सिंघई पथरिया, मो. ९८९३७५३२२३

रात्रि भोजन में भावशुद्धि

श्रमणी आर्यिका विशिष्ट श्री माता जी

शरीर में स्थित ग्रंथियों से निकलने वाला रसायन जहर युक्त हो जाता है इसी से संबंधित एक घटना यहाँ प्रासंगिक है।

एक महिला अपने घर में अकेली थी उसका लगभग एक वर्ष का बच्चा था। परिवार के अन्य सदस्य बाहर गये हुए थे। किसी बदमाश व्यक्ति ने मौका पाकर उसके साथ अत्याचार करना चाहा। उस महिला ने अपने बचाव के लिए आवाज लगाई परन्तु कोई नहीं आया तो अपने अंदर से बदले की आग से झुलसते हुए क्रोध का जहर दाँतों में भावों से भरकर काटना प्रारंभ कर दिया। इसीलिए वह अथक प्रयासों से बच गई और बदमाश व्यक्ति भाग गया।

जब महिला अपा बचाव कर ही थी तब शिशु रो रहा था अब उसे चुप करने की दृष्टि से स्तन पान कराना प्रारंभ कर दिया। थोड़ी देर बाद बच्चे का बदन हरा नीला पड़ने लगा। माँ बेटे को अस्पताल ले गई डॉक्टर्स ने पूरा परीक्षण करके बताया कि बेटे को पिलाये गये दूध में पॉयजन था। वहीं इसके शरीर में फैल रहा है। डॉक्टर की बात सुनकर घबराते हुए माँ बोली दूध मैंने अपने स्तन का पिलाया था फिर जहर कहाँ से आ गया। डॉक्टर ने पुन: पूछताछ करना प्रारंभ किया कि आप उस के पूर्व या उस समय क्या कर रही थी ? तब उसने चोर बदमाश वाली पूरी वंदना सुनाई। डॉक्टर ने कहा हमारे जेसे परिणाम होते है, वैसे रसायन हमारी ग्रंथियों में निर्मित होते हैं और वहीं रसायन ग्रंथियों से निकल कर शरीर में फैलते हैं। आप बच्चे को दूध पिलाने के वक्त क्रोध से युक्त होकर बदला लेने के लिए जहर उगल रही थी वही दुग्ध ग्रंथियों में मिश्रत हो गया है।

उपरोक्त दोनों घटनाओं से सिद्ध होता है कि हमारे भावों का प्रभाव पेड़-पौधों आदि पर तो पड़ता ही है साथ में खान-पान और शरीर पर भी पड़ता है। इसलिए भोजन करते और बनाते समय परिणाम अच्छे रखना चाहिए।

भावनाओं के प्रभाव दूसरों पर कैसे पड़ते है इसको जीवन की घटित घटनाओं से प्रत्येक मानव स्वयं समझ सकता है जैसे आप कही जल्दी-जल्दी में जा रहे है, एक दूसरा व्यक्ति भी जा रहा है परन्तु एक दूसरे से विपरीत दिशा में जा रहे हैं। थोड़ी दूर जाने पर आपके मन में आया, लगता है कोई परिचित व्यक्ति निकल गया है मुड़ कर देखें तो कौन है ? जैसे ही आप मुड़कर देखते हैं वैसे ही वह भी मड़कर देखता हुआ नजर आता है। यहाँ विचारणीय बात यह है कि आपने उसे कहा था कि मुझे मुड़कर देखो ? नहीं। फिर भी उसने क्यों देखा ? इसमें कारण यह है कि आपकी मनोभावना रूपी तरंगों ने आपके मुड़ने से पूर्व ही उस व्यक्ति को स्पर्श कर मुड़ने को प्रेरित किया। इससे सिद्ध होता है कि भावों का प्रभाव एक दूसरे पर पड़ता है।

हमारी समाज गौरवान्वित है

''सारे विश्व की शान विराग गुरुदेव महान''

''विरागसागर संत महान- चलते फिरते ये भगवान''

गुरुदेव आज आपके संघ को देख सभी का मन फूला नहीं समा रहा ८५ पिच्छियों का संघ एक साथ आज तक इस नगर वासियों ने नहीं देखा। आपके ऐतिहासिक प्रवेश से आज इस नगर की जैन ही नहीं जैनेतर समाज भी आल्हादित, उत्साहित थी। संघ के आगमन से संपूर्ण शहर में हर्ष की लहर दौड़ गई। भगवन् पंचम काल में इतनी कठिन चर्या सभी संतों की अनुशासित चर्या, साधना देख हम सभी का रोम-रोम फुलकित हो गया साथ ही हमारी समाज गौरवान्वित है कि इतनी कठिन साधना करने वाले साक्षात् भगवान के प्रतिरूप गुरुदेव हमारी झुमरीतिलैया में पधारे हैं।

आपके चरणों में बारम्बार नमोस्तु-३

सम्मेद शिखर की वंदना कौन कर सकता है

संकलन-श्रमणी आर्यिका विबोध श्री माता जी

सम्मेद शिखर जी क्षेत्र का महात्मय श्री १००८ भगवान महावीर प्रभु ने गौतम गणधर को कहा, फिर बुद्धिशाली एकांगपाठी लोहाचार्य ने भव्य जीवों को कहा- बुद्धिशाली सार अब देवदत्त नामक इस सत्कवि द्वारा सम्मेद गिरि माहात्मय प्रकट किया जाता है।

सम्पूर्ण सिद्धक्षेत्र पर्वतों में श्रेष्ठ सम्मेद शिखर पर बीस पर्वत रूप श्रेष्ठ शिखर हैं वहाँ से उसी प्रमाण में बीस जिनेश्वर मोक्ष को गये हैं। जिस तीर्थंकर का जो सिद्धि स्थान है वही उनका अधिष्ठित स्थान हुआ ऐसा समझे। एवं कूट के नाम भी पृथक-पृथक है।

पूर्व काल में जिन-जिन भय सत्पुरुषों ने इस सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्र की यात्रा करने के लिए संघ निकला था उनके नाम भी पृथक-पृथक है।

इस क्षेत्र में एक-एक टोंक से अनन्त योगिराज मुक्ति गये है ये श्रेष्ठ पर्वत बारह योजन प्रमाण है।

इस श्रेष्ठतम क्षेत्र की यात्रा भव्य जीवों को ही होती है अभण्य जीवों को कभी नहीं। भव्य जीवों की गिनती में आने वाले जीव कैसे भी पाप करने वाले क्यों न हो, किंतु इस क्षेत्र की यात्रा करते ही उन्चास भवों में नियम से मोक्ष जायेंगे। ऐसा केवल ज्ञानियों व मुनियों ने कहा है।

विशेष बात यह है कि ऐकन्द्रिय जीव से लेकर पंचकन्द्रिय जीव पर्यन्त जो नाना प्रकार की आकृति को धारण कर व नाना प्रकार के जीव इस क्षेत्र पर पैदा होने वाले हैं वे सब भव्य की गिनती में ही आते हैं। इस क्षेत्र में अभण्य का जन्म ही नहीं होता वह क्षेत्र की सीमा में आ भी नहीं सकता है।

जैसे प्रत्येक खान से क्षार पदार्थ व क्षार पानी उत्पन्न होता है, वैसे ही प्रत्येक खान से मीठा जल भी उत्पन्न होता है। प्रत्येक खान से जैसे धातु उत्पन्न होती है, वैसे प्रत्येक खान से रत्न भी उत्पन्न होते हैं। उसी प्रकार कुछ भव्य जीव संसार से कर्म बंधन रहित होने वाले हैं उन भव्य जीवों के उत्पन्न होने के लिए श्रेष्ठ पर्वतराज सम्मेदगिरि क्षेत्र खान के समान है।

सम्मेदगिरि क्षेत्र की यात्रा करके अपने संघ का उद्धार करने वाले अनेक यात्री पहले हो गये है। वे इस क्षेत्र के पूजक थे, आराधक थे।

श्रेणिक राजा ने महावीर प्रभु से कहा- हे दयानिधि! मेरे हृदय में निश्चय से आज यात्रा करने का भाव उत्पन्न हुआ है, तब केवल ज्ञान ही लोचन है जिनके ऐसे श्री वीर प्रभु ने कहा- हे राजन! जो तुम्हारा यह यात्रा काल है, वह इस समय तुम्हारे लिए शुभ नहीं है ऐसा मुझे लगता है।

हे राजन्! निश्चय से तुम्हारा जन्म पहले नरक में होने वाला है- ऐसे अप्रीतियुक्त भगवान महावीर के वचन सुनकर उत्कंठा में राजा श्रेणिक ने सम्मेद शिखर क्षेत्र की यात्रा करने का उद्योग किया अर्थात् प्रयाण किया। तब सम्मेदगिरि क्षेत्र का अधिपति एक भूतक नामक यक्ष था। वह दस लाख व्यतरों का अधिपति व बड़ा बलवान था। उसने आंधी से युक्त, असहय व श्यामवर्ण की पवन प्रारंभ कर दी। तब इस प्रकार का बड़ा उपसर्ग देखकर राजा श्रेणिक ने यात्रा का विचार बदल दिया। तब महारानी चेलना ने राजा से कहा- महाराज! केवलज्ञानी के वचन कभी झूठे नहीं होते, वे सत्य व अचल होते हैं इसलिए इस समय आपको इस क्षेत्र की यात्रा नहीं हो सकती है क्योंकि इस क्षेत्र की यात्रा नियम से भव्यों को ही हो पाती है।

(शेष देखे अगले अंक में)

पूज्य गुरुदेव हम वर्षो से आपके दर्शन के प्यासे थे जब मैंने सुना आपका चातुर्मास तीर्थराज सम्मेदशिखर में होने वाला है तो हम सभी का मन मयूर नाच उठा, विश्वास जागृत हुआ कि मन की प्यास जरूर शांत होगी और गुरुदेव झारखण्ड में जब से आपके चरण पड़े है तब से तो मन बेताव हो रहा था और आज जब झुमरीतिलैया में चरण पड़े तो यहाँ के भक्त तो ठीक प्रकृति भी खुश हो गई और तीव्र ग्रीम काल में भी रिमझिम-रिमझिम वर्षा प्रारंभ कर दी। गुरुदेव आपके दर्शन से हम धन्य हो गये आपकी कृपा मैं जीवन भर चाहता हूँ।

राज छावडा झुमरीतिलैया

साधक बने बाधक नहीं

श्रमणी आर्यिका विश्वास श्री माता जी

माँ परोस रही है एक थाली में विभिन्न-विभिन्न व्यजन और लाड़ला लड़का बैठा-बैठा खा रहा है। खाते-खाते जब वह बीच में रुक जाता है तो माँ पूंछती है कि बेटा! क्या बात हो गई ? घी और चाहिये क्या ? पानी लाऊँ ? नहीं। और क्या चाहिये ? कुछ भी नहीं माँ। बोलूँ कैसे ? वह कहता है क्यों ? क्या बात हो गई ? क्या मीठा कड़वा कुछ हो गया- वह माँ पूंछती है। कुछ नहीं है माँ एक बात पूंछना चाहता हूँ- वह लड़का कहता है। आप रसोई बनाना छोड़ दें तो अच्छा है। क्यों क्या बात हो गई बेटा ? कुछ नहीं माँ, मेरे अनुमान से आपकी नेत्रेन्द्रिय कुछ कमजोर हो गई हैं। क्या कहा, नेत्रेन्द्रियाँ कमजोर हो गई हैं ? नहीं बेटा। बहुत सूक्ष्म से सूक्ष्म भी हो तो देख सकती हूँ, ऐसा माँ ने कहा। नहीं माँ! अभी-अभी खा रहा था कि बस कट्ट ऐसी आवाज आ गई है। यह कट्ट क्या होता है माँ ? वह लड़का पूंछता है। देख लो बेटा! सारा का सार मुंह से निकालकर। निकालने के उपरान्त उसमें से कुछ भी नहीं मिला कंकड़ इत्यादि। तब वह पुन: कहता है कि कंकड़ तो हैं ही नहीं इसमें माँ, और कंकड़ नहीं है तो कट्ट करने वाला कौन ? वह माँ सोचती है कि क्या बात हो गई। फिर बाद में उसे मिला है एक मूंग। यह मूंग ही है बेटा, यह कंकड़ नहीं है। हाँ माँ, यह कंकड़ नहीं है तो कंकड़ का बाप जरूर है, मेरा तो खाना ही रूक गया और अभी दर्द हो रहा है।

माँ कहती है बेटा, यह मूंग ही ऐसी है। माँ यह खिचड़ी तो इतनी स्वादिष्ट बनी है कि एक बार में ही सारी की सारी साफ कर दूँ, छूटे नहीं बिल्कुल भी। परन्तु इस मूंग ने मुझे रोक दिया। यह मूँग किस जाति की होती है ? ऐसी ही है बेटा, इसका नाम है ठुर्रु या टर्रा- माँ कहती है। अच्छा माँ, यह ठर्रा या मूँग की क्या पहिचान है ? यह पहिचान तो खाते समय ही हो सकती है बेटा, जब दाँत एकाद दाँत टूट जाये तब ही इसकी पहिचान है।

यह हरा-भरा मूँग जैसा होता है, इसका माप दण्ड भी उतना ही रहता है। और ये सेर भर मूँग से सेर-भर ही होते हैं। ऐसा भी नहीं है कि एकाध होता है, बेटा। माँ कहती है। अच्छा, बेटा बहुत चालाक था। हाँ, तो यह बात है। माँ यह कभी सीझता या पकता नहीं है। यह कभी नहीं सीझता बेटा। और जो सीझता है उसमें भी रोड़े अटकाता है। जिस समय यह किसी खाद्य के साथ खाया जायेगा उस समय उस खाद्य को मुख से निकालना पड़ेगा। न खुद पकता है न दूसरे को पकने देता है। महाराज जी ने अपने को ऐसा ही तो कहा था।

एक उदाहरण में उन्होंने कहा था कि- ऐसे भी जीव होते हैं जो न खुद ही सीझते हैं न दूसरों को सीझने देते हैं। आज तक तो हम टर्रा की कोटि में आ रहे हैं यह ध्यान रखो। हमारा जीवन दूसरे के लिये जो मुक्ति पाने के लिये, आगे बढ़ रहे हैं, उनके लिये साधक तो कम से कम बनें ही, बाधक नहीं।

सबसे अधिक विहार करने वाला संघ

गुरुवर आपका विराग नाम बिल्कुल सही है आप नाम की भांति ही अपने शरीर से विरक्त है लेकिन हम जब आपको देखते हैं तो हम रागी हो जाते हैं आपके चरणों को छोड़ने का मन ही नहीं करता है।

गुरुदेव ने तीन करोड़ से अधिक मंत्रों की जाप्य की हैं जिसे इन हाथों से आशीर्वाद मिल जाता है वे बड़े खुशनसीव होते हैं उनके सभी कार्य स्वत: ही बन जाते हैं। यह मेरा प्रत्यक्ष अनुभव है। तीन माह पूर्व पूज्य गुरुदेव के पैर में चोट लगी। जिससे फेक्चर हो गया डॉक्टर्स ने कहा- आपको आराम करना होगा विहार नहीं कर सकते हो। फिर भी पूज्य गुरुदेव बिना प्लास्टर के बिना किसी दवा के प्रतिदिन २० से २५ कि.मी हर मौसम की तकलीफ को सहते हुए भी अनवरत विहार कर रहे हैं। इनके संघ में (वृद्ध) अधिक उम्र वाले तथा कम उम्र वाले साधु भी हैं जिन्हें २ उपवास, तीन चार आदि अंतराय भी हो जाते हैं फिर भी विहार करते हैं मेरा विश्वास है जगत में सबसे अधिक विहार करने वाला तथा सबसे अधिक अनुशासित चर्यावान संघ तो गुरुदेव विरागसागर जी महाराज का है इनके चरणों में बारम्बार नमोस्तु

सुरेश झाझरी

कष्ट भी किनारे कर जाते हैं

श्रमणी आर्यिका विविक्त श्री माता जी

यद्यपि यह सत्य है कि वीतराग प्रभु और गुरु हमें कुछ नहीं देते लेकिन उनकी भक्ति नाम स्मरण से भक्तों के बड़े से बड़े कष्ट भी दूर हो जाते हैं। ऐसा ही एक प्रसंग है- भक्तों की आस्था के केन्द्र श्रमणाचार्यों के सरताज परम पूज्य राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री १०८ विरागसागर जी गुरूदेव का १४.१.१८ को ऋषभाञ्चल पर आगमन सुन दिल्ली, मेरठ, गाजियाबाद आदि अनेक स्थानों से भक्तों का तांता लग गया। जिनमें गुरुनाम गुरु प.पू. निमित्तज्ञानी आचार्य श्री विमलसागर जी महाराज के परम भक्त श्री जगत जी भी दिल्ली से पूज्य गुरुदेव के दर्शनार्थ आये। उसी दिन आदिनाथ जयंती होने से सभी भक्तों ने गुरुदेव के सान्निध्य में निर्वाण लाडू चढ़ाया तथा आहार दान दे अपने आपको धन्य किया।

सामायिक स्वाध्याय के पश्चात् पूज्य गुरुदेव ससंघ का वहाँ से गाजियाबाद की ओर मंगल विहार हुआ तदनन्तर विहार कराने वाले साबर, कोटा, गाजियाबाद आदि के भक्तगण भी चौके आदि की गाड़ी के साथ रवाना हुए। तभी एक गाड़ी के टकराने से वहाँ का मेनगेट टूटकर गिरा उसी समय गेट से जगत जी की गाड़ी निकल रही थी योगायोग पूरा गेट उसी पर गिरा सीमेन्ट का बड़ा भारी गेट के गिरने से गाड़ी उसमें दब गई उसके कांच आदि चकनाचूर हो गये। गाड़ी की हालत देखकर सभी लोग घबरा गये कि गाड़ी में बैठने वाले का क्या हुआ होगा? लेकिन आश्चर्य की बात रही कि उसमें बैठने वाले जगत जी स्वत: गाड़ी से बाहर आ गये उन्हें कोई खरोज तक नहीं आई और आती भी कैसे जिसके अंदर असीम गुरु भक्ति भरी हो उसका कोई क्या कर सकता है। देवता भी उसके सामने नतमस्तक हो जाते है कष्ट स्वत: किनारा कर जाते है ऐसा ही गुरुओं का प्रभाव होता है।

उदयपुर में दीक्षित दीक्षार्थियों की ओर से गुरुचरण वंदना

गुरुवर जहाँ हम है वहाँ.....
गुरुवर जहाँ, हम है वहाँ, गुरु के सिवा जाना कहाँ-२
गुरु के चरण, है शिवपुर का धाम, रहना है हर पल हमको यहाँ
जीवन शुरु, होता यहाँ, गुरु के सिवा जाना कहाँ।
तस्वीर गुरु की, मन में बसी, सासों की सरगम गुरुवर से है-२
जीवन सफर में संवल गुरु, अवसान गुरुवर के चरणों में है
अर्चा करूँ, गुरु की सदा, गुरु के सिवा जाना कहाँ
गुरु के चरण है शिवपुर का धाम, रहना है हर पल हमको यहाँ
गुरुवर जहाँ, हम है वहाँ गुरु के ....
संयम का तौफा, गुरु ने दिया, आतम का श्रृंगार गुरुवर से हो-२
एक-एक कदम हम, बढ़ते चले, अंगुली सहारा गुरुवर का हो
गुरु साथ हो, मुक्ति सदा, गुरु के सिवा जाना कहाँ
गुरु के चरण, है शिवपुर का धाम, रहना है हर पल हमको यहाँ
गुरुवर जहाँ, हम है वहाँ गुरु के ....
सर्वस्व अर्पण, गुरु को किया, गुरुवर ही जाने सुख दुख मेरा-२
अब और की, हमें आश क्या, गुरु की शरण है जीवन मेरा
भक्ति करूँ गुरु की सदा, गुरु के सिवा जाना कहाँ
गुरु के चरण, है शिवपुर का धाम रहना...
गुरुवर जहाँ, हम है वहाँ गुरु के सिवा जाना कहाँ

गुरु वंदना में समर्पित शिष्यों की नामावली

श्रमणी आर्यिका विसंयोजना श्री माता जी

गुरुवर के चरण मोक्ष की योजना
करते हर क्षण वो कर्मों की विसंयोजना।
विचक्षण बुद्धि से जो आत्म रक्षण करें,
उनके चरणों में पल-पल हम वंदन करें।। १।।

हम शिष्यों की हर बात विदित हे जिन्हें,
सभी शास्त्रों को पढ़कर वो विदिता बने।
त्याग-तप में विरत भव्य जीवों पर विरद,
उनकी भक्ति हम सब विभक्त बने।। २।।

कर्म शत्रु पर विजित वो होने चले,
घोर उपसर्ग को जीत विजिता हुए।
सारा संसार विस्मित है इन पर तभी,
ऐसे गुणों से विभूषित है गुरु मेरे।। ३।।

कोई भाषा नहीं भक्ति विभाषा है ये,
गुरु भक्ति की छोटी सी परिभाषा है ये।
दीक्षा देकर गुरु ने उपकार किया,
उन्हीं शिष्यों के नामों की भाषा है ये।। ४।।

अंत में बस यही गुरु से प्रार्थना,
नाम सार्थक करें ऐसी है भावना।
जब तक संसार है गुरु शरणा मिले,
चरण गुरु के पकड़ मोक्ष को हम वरें।। ५।।

सार्थक वृद्धत्व

आ. श्री १०८ विशुद्धसागर जी

तन दुर्बल
कषायें सबल,
बाल सफेद
वासनायें काली
फिर भी मन भागे,
ऐसे तन के
बूढ़ों को
आगम नहीं कहता
वृद्ध।

दर्शन प्रशस्त
चारित्र प्रशस्त,
प्रशस्त है ज्ञान जिसका
अनुभव-आगम-कुशल
मानव
जिन वाणी में
सार्थक
वृद्धत्व को
होता है प्राप्त।

आध्यात्मिक शंका-समाधान

प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज

वर्तमान भौतिक वादी युग में संसारी प्राणी भोगों की अभिलाषाओं की पूर्ति के लिये दिनरात पैसा कमाने में लगा है। जैन कुल में जन्म लेकर भी छः आवश्यक कर्त्तव्यों को भूलता जा रहा है। संस्कारित परिवारों में देवदर्शन पूजन तो फिर भी व्यक्ति करता है पर स्वाध्याय के लिये उसके पास समय नहीं और जो स्वाध्याय भी करते हैं वे आर्ष परम्परा के आचार्य प्रणीत ग्रन्थों का स्वाध्याय या तो करते ही नहीं या करते हैं तो उसके सही अर्थ भावार्थ को न समझ पाने के कारण ये उन लोगों द्वारा कहे जाते हैं जो अपनी पंथ, आम्नाय विचारधारा या ख्याति लाभ प्रशंसा का कारण कुछ का कुछ बताकर भ्रमित कर देते हैं।

प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज ने मोक्षमार्ग में आरूढ़ होकर क्षितिज की ऊँचाईयों को प्राप्त नहीं किया बल्कि वर्तमान समय के सबसे बड़े चतुर्विध संघ के नायक हैं। ज्ञान की असीम गहराईयों में डुबकी लगाकर सर्वोदया, रत्नत्रय वर्धिनी, श्रमण प्रबोधनी, श्रमण सम्बोधनी आदि संस्कृत टीकाओं के अलावा १५० से भी अधिक आलेखों द्वारा जन मानस के कल्याण के लिये जिनागम को दुर्लभ रत्न प्रदान किये हैं। चारों अनुयोगों को समझाने हेतु जन सामान्य की शंकाओं के समाधान हेतु क्रमिक प्रस्तुति-

शंका जिन बिंब दर्शन प्रथम सम्यक्त्व की उत्पत्ति का कारण किस प्रकार है?

समाधान- देखो (ध. पु. ६/१, ९-९,२२/४२७/९)कथं जिणबिंब दसणं पदम सम्मत्तुप्पतीए कारणं? जिण बिंब दंसणंण णिधत्त णिकाचिदस्स वि मिच्छत्तादि कम्म कलावस्सखय दंसणादो।

अर्थ- प्रः जिन बिंब दर्शन प्रथम सम्यक्त्व की उत्पत्ति का कारण किस प्रकार से है?

उत्तर- जिन बिंब दर्शन से निछत्त और निका चित रूप भी मिथ्यात्वादि कर्म कलाप का क्षय देखा जाता है।

शंका- लद्धि संपण्ण रिसि दंसणं पि पढम सम्मत्तुप्पत्तीए कारणं होदि, तमेत्थ पुध किण्ण भण्णदे।

अर्थ - लब्धि सम्पन्न ऋषियों का दर्शन भी तो प्रथम सम्यक्त्व की उत्पत्ति का कारण होता है अतएव इस कारण को यहाँ पृथक रुप से क्यों नहीं कहा?

समाधान- यह प्रश्न (ध.पु.६, ९-९, ३०/४३०) में किया गया है वहीं इसका उत्तर इस प्रकार से दिया गया है।

ण एदस्स वि जिणबिम्ब दंसणो अंतब्भावादो। उज्जंत-चंपा-पावा णयरादि दंसणं वि एदेणे... विणा पढम सम्मत्त गहणा भावा।

अर्थ- नहीं कहा, क्योंकि लब्धि सम्पन्न मुनियों के दर्शन का भी जिनबिम्ब दर्शन में ही अन्तर्भाव हो जाता है। ऊर्जयन्तपर्वत, चम्पापुर व पावापुर नगर आदि के दर्शन का भी जिनदर्शन के भीतर ग्रहण कर लेना चाहिए।

क्योंकि उक्त प्रदेशवर्ती जिनबिम्बों के दर्शन तथा जिन भगवान के निर्वाण गमन के कथन के बिना प्रथम सम्यक्त्व का ग्रहण नहीं हो सकता।

शंका- नरकों में यदि जाति स्मरण को सम्यक्त्व का कारण माना जाये तो फिर सभी नारकियों को सम्यक्त्व होना चाहिए, क्योंकि वे सभी अपने विभंगावधि ज्ञान से १, २, ३ आदि भवों को स्मरण करते हैं?

समाधान- (ध.पु.६/१/९,९,८/४२२/२) में इस प्रश्न का उत्तर इस प्रकार से दिया है यथा-

यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि सामान्य रूप से भव स्मरण के द्वारा सम्यक्त्व की उत्पत्ति नहीं होती, किंतु धर्म बुद्धि से पूर्व में किये गये धर्मानुष्ठानों की विफलता के दर्शन अर्थात् स्मरण से ही प्रथम सम्यक्त्व की उत्पत्ति का कारण इष्ट है, जिससे पूर्वोक्त दोष प्राप्त नहीं होता।

और इस प्रकार की बुद्धि सभी नारकियों की होती नहीं है। क्योंकि तीव्र मिथ्यात्व के वशीभूत नारकी जीवों के पूर्व भवों का स्मरण होते हुए भी उक्त प्रकार के उपयोग का अभाव है इसलिये वहाँ जातिस्मरण ही प्रथम सम्यक्त्वोपत्ति का कारण है।

शंका- वेदनानुभव भी समयक्त्व की उत्पत्ति का कारण नहीं हो सकता, क्योंकि वेदना अनुभव तो सब नारकियों के साधारण होता है। यदि वह अनुभव सम्यक्त्वोत्पत्ति का कारण हो तो सब नारकी जीव सम्यग्दृष्टि होंगे, किन्तु ऐसा है नहीं, क्योंकि वैसा पाया नहीं जाता है?

समाधान- पूर्वोक्त शंका का परिहार करते हैं वेदना सामान्य सम्यक्त्वोत्पत्ति का कारण नहीं है, किंतु जिन जीवों के ऐसा उपयोग होता है कि अमुक वेदना अमुक मिथ्यात्व के कारण या असंयम से उत्पन्न हुई, उन्हीं जीवों की वेदना, सम्यक्त्वोत्पत्ति का कारण होती है। अन्य जीवों की वेदना नरकों में सम्यक्त्वोत्पत्ति का कारण नहीं होती, क्योंकि उसमें उक्त प्रकार के उपयोग का अभाव होता है।

शंका- नारकी जीवों के धर्म श्रवण किस प्रकार संभव है, क्योंकि वहाँ तो ऋषियों के गमन का अभाव है?

समाधान- (१) नहीं, क्योंकि, अपने पूर्व भव के सम्बन्धी जीवों के धर्म उत्पन्न कराने में प्रवृत्त और समस्त बाधाओं से रहित सम्यग्दृष्टि देवों का नरकों में गमन देखा जाता है।

(२) नीचे की चार पृथिवियों में धर्म श्रवण के द्वारा प्रथम सम्यक्त्व की उत्पत्ति नहीं होती, क्योंकि वहाँ देवों के गमन का अभाव है।

शंका- वहाँ ही विद्यमान सम्यग्दृष्टियों से धर्मश्रवण के द्वारा प्रथम सम्यक्त्व की उत्पत्ति क्यों नहीं होती।

समाधान- ऐसा पूछने पर उत्तर देते हैं कि नहीं होती, क्योंकि भव सम्बन्ध से या पूर्व वैर के संबंध से परस्पर विरोधी हुए नारकी जीवों के अनुगृह्य अनुग्राहक भाव होना असंभव है।

शंका- जिन महिमा को देखकर भी कितने ही मनुष्य प्रथम सम्यक्त्व को प्राप्त करते हैं इसलिए तीन के स्थान पर चार कारणों से मनुष्य, प्रथम सम्यक्त्व को प्राप्त करते हैं, ऐसा कहना चाहिए?

समाधान- (१) यह कोई दोष नहीं, क्योंकि जिनमहिमा दर्शन का जिन बिम्ब दर्शन में अन्तर्भाव हो जाता है।

(२) अथवा मिथ्यादृष्टि मनुष्यों के आकाश में गमन करने की शक्ति न होने से उनके चतुर्विध देव निकायों के द्वारा किये जाने वाले नंदीश्वर द्वीपवर्ती जिनेंद्र प्रतिमाओं के महामहोत्सव का देखना संभव नहीं है, इसलिए उनके जिन महिमा दर्शन रूप कारण का अभाव है।

(३) किन्तु मेरु पर्वत पर किये जाने वाले जिनेंद्र महोत्सवों को विद्याधर मिथ्यादृष्टि देखते हैं, इसलिए उपर्युक्त अर्थ नहीं कहना चाहिए, ऐसा कितने ही आचार्य कहते हैं, अतएव पूर्वोक्त अर्थ ही ग्रहण करना चाहिए।

विज्ञापन दर

रंगीन - फुल पृष्ठ	-	11000/-	**ब्लेक एण्ड व्हाईट - फुल पृष्ठ**	-	5000/-
रंगीन - हॉफ पृष्ठ	-	6000/-	**ब्लेक एण्ड व्हाईट - हॉफ पृष्ठ**	-	2500/-
रंगीन - चौथाई पृष्ठ	-	3000/-	**ब्लेक एण्ड व्हाईट - चौथाई पृष्ठ**	-	1500/-

'विरागवाणी' मासिक पत्रिका की सदस्यता एवं विज्ञापन हेतु संपर्क करें-

प्रबंध सम्पादक : श्री अनूप कुमार जैन

जी-१४१ गौतम नगर, भोपाल-२३ ☎: 0755-2789703, मो.9425016879

गुरु सेवा, मुक्ति पथ का मेवा

गुरु सेवा, मुक्ति पथ का मेवा पाथेय है। गुरु सेवा ही शिष्य के लिए सभी धर्मों में श्रेष्ठ धर्म तथा श्रेष्ठ कर्त्तव्य है। एक आदर्श शिष्य अपने गुरु की सेवा प्राप्त करने को वैसे ही उत्सुक रहता है, जिस प्रकार पपीहा स्वाति नक्षत्र में पानी की बूंद के लिए बादल की ओर टकटकी लगाये रहता है।

गुरु अपकार को सहकर अनगिनत उपकार करते हैं। बिना किसी अपेक्षा के शिष्यों को शिक्षा व दीक्षा देते हैं, रत्नत्रय रूप अमूल्य निधि प्रदान करते हैं। वह शिष्य गुरु सेवा के प्रसाद से जीवन की अप्रतिम ऊँचाईयों को प्राप्त करता है। न केवल लौकिक अपितु पारलौकिक उपलब्धियाँ उसके जीवन में आविर्भूत हो जाती हैं। जहाँ दुनियाँ स्वार्थी है, वहाँ उन्होंने निस्वार्थ भावना से हमारा कल्याण किया है। जो कुछ उपलब्धि है, सब उनकी देन है-

नाथ तेरी कृपा हो रही है, जो सुख शांति से आज हम है।
उतने उपकार कैसे चुकाये, सौ जनम का समर्पण भी कम है।

अत: शिष्यों का धर्म है कि उनके न चुकाने योग्य उपकारों के बदले में उनकी सेवा, वैयावृत्ति, उनके अनुकूल अपना दायित्व निभायें। ऐसी चिंतवन की धारा में प्रवाहमान जो शिष्य सेवा को सौभाग्य मानता है, उसके जीवन में उपलब्धियों की धारा का प्रवाह होता रहता है। यही आत्मपूर्ण उपलब्धि है।

हँसते रहो हँसाने के लिए

पति- आज कल तुम न सिगरेट पीने से रोकती हो, न शराब पीने से, सब शिकायतें खत्म हो गई क्या?
पत्नि- जब फायदा दिख रहा हो तो शिकायते बंद हो जाती है।
पति- फायदा, क्या फादया?
पत्नि- वो एल.आई.सी. वाला आया था, बता रहा था कि मुझे क्या-क्या फायदा होगा।

कुछ खूबसूरत पंक्तियाँ .....

ये शादी नहीं आसान, बस इतना समझ लीजिए।
हरी मिर्ची की टॉफी है, और चूस कर खानी है।

प्रीटो- मुझे अपने पति पर शक है कि रोज छिपकर किसी लड़की से मिलते है?
जीटो- अब तू क्या करेगी?
प्रीटो- कल ही उसके पीछे अपना वॉयफ्रेण्ड लगाती हूँ।
पति- सब्जी में नमक क्यों नहीं है?
पत्नि- वो सब्जी थोड़ी जल गई थी।
पति- तो नमक क्यों नहीं डाला?
पत्नि- हम लोग जले पर नमक नहीं छिडकते।
पप्पू- माँ, मैं सोता हुआ कैसा लगता हूँ?
माँ- बहुत प्यारा
पप्पू- तो फिर उठाती क्यों हो।
सुरेश- बिना छीले ही केला खा रहा था।
रमेश- अरे इसे छील तो लो।
सुरेश- अरे! यार नहीं, मुझे पता है कि इसने केला ही है।

कुमारी निधि जैन, कोटा

अन्य श्रमण संघों के चातुर्मास स्थल सूची

क्र	नाम साधु	पिच्छी	चातुर्मास स्थल सूची
१.	आचार्यश्री विद्यासागर जी महराज		खजुराहो (म.प्र.)
२.	आचार्य श्री कुसाग्रनन्दी श्री महाराज		देवलगांव राजा (महाराष्ट्र)
३.	आचार्य श्री देवनन्दी जी महाराज		णमोकार तीर्थ (महा.)
४.	आचार्य श्री गुप्ति नन्दी जी महाराज		नागपुर (महा.)
५.	आचार्य श्री कुन्थुसागर जी महाराज		कुन्थुगिरि (महा.)
६.	स्थिवराचार्य श्री संभव सागर जी महाराज		सम्मेद शिखर जी मधुवन (झारखण्ड)
७.	आचार्य श्री पद्मनन्दी जी महाराज		इच्छलकरंजी (महा.)
८.	आचार्यश्री तन्मयसागर जी महाराज		मधुवन (झारखण्ड)
९.	आचार्य श्री निरंजन सागर जी महाराज		मधुवन (झारखण्ड)
१०.	ऐलाचार्यश्री विशुद्धसागर जी महाराज		गया (विहार)
११.	आचार्यश्री विपुलसागर जी महाराज	३	पटना (विहार)
१२.	आचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज		एम.डी. कॉलेज आगरा
१३.	आचार्य श्री विवेक सागर जी महाराज		श्री सोनागिरजी सिद्ध क्षेत्र (म.प्र.)
१४.	आचार्य श्री पंचकल्याणक सागर जी महाराज		श्रवण वेलगोला (कर्नाटक)
१५.	आचार्य श्री सुनील सागर जी महाराज	४५	गांधी नगर अहमदाबाद
१६.	आचार्य श्री चैत्यसागर जी महाराज		कोसभां
१७.	आचार्य श्री विद्यानन्द जी महाराज		कुन्दकुन्द भारती देहली
१८.	आचार्य श्री श्रुतसागर जी महाराज		कुन्दकुन्द भारती देहली
१९.	आचार्यश्री वर्द्धमान सागर जी महाराज		श्रवण बेलगोला (कर्नाटक)
२०.	बालाचार्य श्री सुरत्न सागर जी महाराज		बडौत
२१.	मुनिश्री प्रज्ञासागर जी महाराज		श्रवण बेलगोला
२२.	मुनिश्री प्रवलसागर जी महाराज		कम्बल हल्ली
२३.	मुनिश्री सौरभ सागर जी महाराज		मुराद नगर गंगा नगर
२४.	आचार्य श्री कुमुन्दनन्दी जी महाराज		जयनगर बगैलौर (कर्नाटक)
२५.	आचार्य श्री जय सागर जी महाराज		बडौदा (गुजरात)
२६.	मुनि श्री प्रतीक सागर जी महाराज		पुष्पगिरि सोनकच्छ जिला-देवास
२७.	उपाध्याय श्री नयन सागर जी महाराज		चण्डीगढ़
२८.	गणिनी आर्यिका विशुद्धमती माता जी		१५ तलवन्डी कोटा (राजस्थान)
२९.	गणिनी आर्यिका जिनवाणी माता जी		श्रवण वेलगोला (कर्नाटक)
३०.	मुनि श्री प्रसन्नसागर जी महाराज		अहमदाबाद
३१.	मुनिश्री समयसागर जी महाराज		सतना
३२.	मुनि श्री प्रमाण सागर जी महाराज		रतलाम

प.पू. राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री १०८ विरागसागर जी महामुनिराज ससंघ
के उपसंघों के वर्षायोग- २०१८ का विवरण

क्र	साधु का नाम	दीक्षा गुरु	चातुर्मास स्थान/ सम्पर्क सूत्र
१.	श्रमणाचार्य श्री विशुद्धसागर जी महाराज श्रमण श्री विश्ववीर सागर जी महाराज श्रमण श्री सुव्रतसागर जी महाराज श्रमण श्री अनुत्तर सागर जी महाराज श्रमण श्री अनुपम सागर जी महाराज श्रमण श्री अप्रिमत्त सागर जी महाराज श्रमण श्री प्रणेय सागर जी महाराज श्रमण श्री प्रवण सागर जी महाराज श्रमण श्री सर्वार्थ सागर जी महाराज श्रमण श्री साम्यसागर जी महाराज श्रमण श्री समत्व सागर जी महाराज श्रमण श्री सम्पूर्ण सागर जी महाराज श्रमण श्री सदय सागर जी महाराज श्रमण श्री साध्य सागर जी महाराज श्रमण श्री सदभाव सागर जी महाराज श्रमण श्री साक्ष्य सागर जी महाराज श्रमण श्री संजयंत सागर जी महाराज श्रमण श्री सारस्वतसागर जी महाराज श्रमण श्री संयत सागर जी महाराज	पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी श्रमणाचार्य विशुद्धसागर जी महाराज	श्री १००८ पार्श्वनाथ खण्डेवाल दिग. जैन मंदिर राजा बाजार औरंगाबाद (महाराष्ट्र) पिन-४३१००१ स.सूत्र- श्री विनोद लुहाडिया उ.प्र. मो. ९४२२२०१३६४ ललित पाटनी मो. ९४२२७०७६५१
२.	श्रमणाचार्य श्री विशद सागर जी महाराज श्रमण श्री विशाल सागर जी श्रमणी आर्यिका भक्तिभारती माताजी ऐलक विदक्षसागर जी क्षुल्लक विसोम सागर जी क्षुल्लिका वात्सल्य भारती माता जी	पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज श्रमणाचार्य विशदसागर जी महाराज	श्री दिग. जैन मंदिर न्यू उस्मान पुरा दिल्ली स.सूत्र- बा.ब्र. ज्योति दीदी मो. ९८२९०७६०८५ बा.ब्र. सपना दीदी मो. ९८२९१२७५३३
३.	श्रमणाचार्य श्री विभवसागर जी श्रमण श्री विभाश्वर सागर जी श्रमण श्री अर्हंत सागर जी श्रमण श्री आचार सागर जी श्रमण श्री शुद्धात्म सागर जी श्रमण श्री सिद्धात्म सागर जी श्रमणी आर्यिका ओमश्री माता जी क्षुल्लिका आराधनाश्री माता जी क्षुल्लिका संस्तुतिश्री माता जी	पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज श्रमणाचार्य विभवसागर जी महाराज	श्री १००८ पार्श्वनाथ स्वामी दिग. जैन देहरासर ट्रस्ट २१६ गुलाल बाड़ी मुम्बई (महाराष्ट्र) पिन- ४००००२ स.सूत्र- (०२२) २२४२६६७

क्र	साधु का नाम	दीक्षा गुरु	चातुर्मास स्थान/ सम्पर्क सूत्र
४.	श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महाराज श्रमण श्री विचिन्त्य सागर जी महाराज श्रमण श्री विजेयसागर जी महाराज श्रमण श्री विश्वार्य सागर जी महाराज श्रमण श्री विश्वार्थ सागर जी महाराज श्रमण श्री विध्रुव सागर जी महाराज श्रमण श्री विव्रत सागर जी महाराज श्रमण श्री विशुभ्र सागर जी महाराज श्रमण श्री विशम सागर जी महाराज श्रमण श्री विश्वांक सागर जी महाराज श्रमण श्री विश्वार्क सागर जी महाराज श्रमणी आर्यिका विमलान्तश्री माताजी श्रमणी आर्यिका विक्रान्तश्री माताजी श्रमणी आर्यिका विश्वान्तश्री माताजी श्रमणी आर्यिका विजयान्तश्री माताजी श्रमणी आर्यिका विभान्तश्री माता जी श्रमणी आर्यिका विनयांतश्री माता जी ऐलक विश्वज्ञ सागर जी क्षुल्लक विश्वाभ सागर जी क्षुल्लिका विदेहान्तश्री माता जी	पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी श्रमणाचार्य विमर्शसागर जी महाराज	श्री आदिनाथ दिग.जैन मंदिर ऋषभ नगर गुलावरा, छिदवाड़ा (म.प्र.) पिन कोड- ४८०००१ स.सूत्र- श्री राजेन्द्र पाटोदी मो. ८३१९४८८२५१ श्री अमित बज मो. ९००९५७१००८
५.	श्रमणाचार्य (घोषित) श्री विहर्षसागर जी श्रमण श्री वीरम्रमाट सागर जी श्रमण श्री विजयेश सागर जी क्षुल्लक विश्वोत्तर सागर जी	पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज आचार्य कुमुन्दनन्दी जी महाराज पू.गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज	श्री पार्श्वनाथ दिग.जैन मंदिर डी-२१०, श्याम पार्क एक्सेटेन्सन साहिवाबाद गांजियाबाद (उ.प्र.) स.सूत्र-आर.डी.जैन मो. ७९८२३५४९२० धनराज जैन, ९३१३३९३७५३
६.	श्रमणाचार्य विनिश्चय सागर जी महाराज श्रमण श्री विश्वदृष्टा सागर जी महाराज श्रमण श्री प्रांजल सागर जी महाराज श्रमण श्री प्रवीर सागर जी महाराज श्रमण श्री प्रवर सागर जी महाराज श्रमण श्री प्रवीण सागर जी महाराज श्रमण श्री प्रत्यक्षसागर जी महाराज श्रमण श्री प्रज्ञान सागर जी महाराज क्षुल्लक श्री प्रज्ञान्स सागर जी महाराज क्षुल्लक श्री प्रतीर्क सागर जी महाराज क्षुल्लक श्री सुमित्र सागर जी महाराज	पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज श्रमणाचार्य विनिश्चय सागर जी महाराज आचार्य श्री सुनील सागर जी	श्री गणेश दिग.जैन संस्कृत महाविद्यालय वर्णी भवन मोराजी सागर (म.प्र.) स.सूत्र- बा.ब्र. श्रीपाल भैया जी मो. ९८९३९९६१३१

क्र	साधु का नाम	दीक्षा गुरु	चातुर्मास स्थान/ सम्पर्क सूत्र
७.	श्रमणाचार्यश्री विभदसागर जी महाराज श्रमण श्री प्रक्षाल सागर जी महाराज क्षुल्लक श्री उपयोग सागर जी महाराज क्षुल्लक श्री परिणाम सागर जी महाराज	पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी श्रमणाचार्य श्री विमदसागर जी महाराज	श्री पद्मप्रभु बीसपंथी दिग. जैन मंदिर महावीर सेरी दाहोद (गुज) स.सूत्र- शैलेष भाई सरैया ९४२६४३१४३७ अनिल (संघस्थ) ८२००८९५१३५
८.	श्रमणाचार्य श्री विनम्रसागर जी महाराज श्रमण श्री विज्ञसागर जी महाराज श्रमण श्री विनतसागर जी महाराज श्रमण श्री विनयसागर जी महाराज श्रमण श्री विनन्दसागर जी महाराज श्रमणी आर्यिका विमलश्री माता जी श्रमणी आर्यिका विनेहश्री माता जी श्रमणी आर्यिका विषम श्री माता जी श्रमणी आर्यिका विपतश्री माता जी श्रमणी आर्यिका विपुलश्री माता जी श्रमणी आर्यिका विश्रयश्री माता जी श्रमणी आर्यिका विमुदश्री माता जी ऐलक श्री विनुतसागर जी महाराज क्षुल्लक श्री विश्वकुन्द सागर जी क्षुल्लिका विश्वश्री माता जी क्षुल्लिका विश्रांतश्री माता जी	पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज श्रमणाचार्य श्री विनम्रसागर जी महाराज	श्री आदिनाथ दिग.जैन चैत्यालय मंदिर बतासा बाजार, भिण्ड (म.प्र.) पिन कोड- ४७७००१ स.सूत्र- श्री महेन्द्र कुमार जैन, कोषा. मो. ९८२६२१४४६२ श्री रतनलाल जी जैन, अध्यक्ष मो. ९४२५१२९४७०
९.	श्रमणाचार्य श्री विकर्ष (प्रज्ञ) सागर जी श्रमण श्री प्रथमानन्द सागर जी क्षुल्लिका श्रयागमती माता जी	पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज श्रमणाचार्य विकर्ष (प्रज्ञ) सागर जी	श्री दिग. जैन मंदिर ग्रीन पार्क देहली स.सूत्र- ७११४५५३२०
१०.	श्रमण विश्वयश सागर जी	पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज	श्री गणेश दिग. जैन संस्कृत महाविद्यालय लक्ष्मीपुरा, वर्णी भवन मौराजी, सागर (म.प्र.)
११.	श्रमण श्री विनिश्चय सागर जी महाराज क्षुल्लक विभद्रसागर जी महाराज	पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज	श्री क्षेत्र कनकगिरि जि. चामराज नगर (कर्नाटक) पिन- ५७११२८ स.सूत्र- भट्टारक भुवन कीर्ति जी मो. ९४४८७८३०५८ बा.ब्र. प्रियंका दीदी, ७५८७२०३८८१
१२.	श्रमण श्री विश्वरत्न सागर जी	पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज	श्री दिग. जैन मंदिर गुनौर (पन्ना) स.सूत्र- श्री चक्रेश जैन मो. ९७५३०७६३३२ श्री वीरेन्द्र जैन, ७४८९४०७५२८

क्र	साधु का नाम	दीक्षा गुरु	चातुर्मास स्थान/ सम्पर्क सूत्र
१३.	श्रमण श्री विबुद्धसागर जी महाराज	पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज	श्री दिग. जैन मंदिर खुर्जा जिला- बुलन्दशहर (उ.प्र.)
१४.	श्रमण श्री विशेष सागर जी महाराज	पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज	श्री आदिनाथ दिग.जैन मंदिर रिसोडर जिला- वाशिम (महाराष्ट्र) ४४४५०६ स.सूत्र- सचिन, मो.९९७५३३०३९१ सचिन सराफ, ९०९६५९६६३२
१५.	श्रमणश्री विश्रुतसागर जी महाराज क्षुल्लक श्री निर्भीकसागर जी महाराज	पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज आचार्य निर्भयसागर जी महाराज	श्री पार्श्वनाथ दिग.जैन मंदिर छीपी टोला आगरा (उ.प्र.) स.सूत्र- प्रवेश जैन, मंत्री मो. ९३१९१२७१३४
१६.	श्रमण श्री अर्पणसागर जी महाराज	श्रमणाचार्य श्री विनिश्चय सागर जी महाराज	श्री चक्रेश्वरी महिला समाज, १०२ जयनगर थर्ड ब्लाक बैगलूर- २५००११ एल.वेजपंती ९८४४५३५७५६ जयराज आरिगा ९९४५२५७५७५
१७.	श्रमण श्री प्रशमसागर जी महाराज श्रमण श्री प्रणुतसागर जी महाराज	श्रमणाचार्य श्री विशुद्धसागर जी महाराज	श्री आदिनाथ दिग.जैन मंदिर भजन गली शास्त्री नगर,परमणी स.सूत्र-श्रीपवन डोगरे, ९८२३७७४७७३
१८.	श्रमण श्री विश्वतीर्थ सागर जी	पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज	---
१९.	श्रमण श्री विश्वास सागर जी महाराज	पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज	---
२०.	श्रमण श्री प्रथम सागर जी महाराज	श्रमणाचार्य श्री विमद्सागर जी महाराज	---
२१.	श्रमण श्री सुप्रभसागर जी महाराज श्रमण श्री आराध्य सागर जी महाराज श्रमण श्री प्रणत सागर जी महाराज	श्रमणाचार्य श्री विशुद्धसागर जी महाराज	१००८ अंबेझर पार्श्वनाथ दिग.जैन मंदिर नगर परिषद चौक, वाशिम (महा) स.सू.- निखिल काला मो. ९३७३२९५७७७
२२.	श्रमण श्री सुयश सागर जी महाराज श्रमण श्री समर्थसागर जी महाराज श्रमण श्री संकल्प सागर जी महाराज	श्रमणाचार्य श्री विशुद्धसागर जी महाराज	श्री पार्श्वनाथ दिग.जैन मंदिर जैन गली तामसा (म.प्र.) स.सूत्र- अनीष जैन मो. ९४२३६९२९६२ अजित पाटनी, ९६०४४७०००१
२३.	श्रमण श्री आचरण सागर जी महाराज	श्रमणाचार्य श्री विभवसागर जी महाराज	श्री दिग. जैन मंदिर, फलटन (महा.)
२४.	श्रमण श्री संस्कार सागर जी महाराज	श्रमणाचार्य श्री विनिश्चय सागर जी महाराज	श्री दिग. जैन मंदिर,बबीना केंट

क्र	साधु का नाम	दीक्षा गुरु	चातुर्मास स्थान/ सम्पर्क सूत्र
२५.	श्रमण श्री अरिजित सागर जी महाराज	श्रमणाचार्य श्री विशुद्धसागर जी महाराज	१००८ महावीर दिग. जैन मंदिर कल्याण मण्डप के पास पांडिचेरी स.सूत्र- नीरज जैन, ९४४३०८३४०५
२६.	श्रमण श्री आदित्य सागर जी महाराज श्रमण श्री सहजसागर जी महाराज	श्रमणाचार्य श्री विशुद्धसागर जी महाराज	१००८ महावीर दिग. जैन मंदिर, एच.एल.ए. विमानपुर बैगलूर (कर्ना.) सं.सूत्र- गौरव जैन, ७२०४०३२०९६
२७.	श्रमण श्री आस्तिक्य सागर जी महाराज श्रमण श्री प्रणीत सागर जी महाराज	श्रमणाचार्य श्री विशुद्धसागर जी महाराज	१००८ श्रेयांसनाथ दिग.जैन मंदिर, सदर बाजार, पुलिस स्टेशन के सामने जालना (महाराष्ट्र) स.सू.-अनिल छावडा ९४२३१५६०२७
२८.	श्रमण श्री विभंजन सागर जी महाराज	पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज	----
२९.	श्रमण श्री विहसंत सागर जी महाराज श्रमण श्री विश्वसूर्य सागर जी महाराज	पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज	श्री दिग. जैन मंदिर मौजपुर देहली स.सूत्र-बी.के. जैन, ९९८८५५८५७ सुभाष चन्द्र जैन, ९३५०५४६०५३
३०.	श्रमण श्री विश्रांतसागर जी महाराज क्षुल्लक श्री विश्वोत्तम सागर जी महाराज	पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज	श्री दिग. जैन पार्श्वनाथ भवन, फतेहपुरी गेट बजाज रोड, सीकर (राजस्थान) स.सूत्र- विनोद सेठी- ९३५१३७२९८४ संतोष कुमार- ९९२८३६१४७२
३१.	श्रमण श्री विश्वनाथ सागर जी	पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज	श्री दिग. जैन महुआ जी जि. भीलवाड़ा (राजस्थान) पि.को. ३११६०४ स.सू-अनिल सेठिया, ९४१४६८६४६० मुकेश सेठिया, ७७९१८३७५२९
३२.	श्रमण श्री विकसंत सागर जी	पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज	श्री आदिनाथ दिग. जैन मंदिर सेक्टर ७ एरोली न्यू मुम्बई सं.सू.- गणेश लाल, ९८२०८७३७४८ देवेन्द्र रजावत, ९८६७१३६४१३
३३.	श्रमण श्री विभक्त सागर जी	श्रमणाचार्य श्री विशदसागर जी महाराज	श्री दिग. जैन मंदिर खुर्जा जिला- बुलन्दशहर (उ.प्र.)
३४.	श्रमण श्री अध्ययन सागर जी श्रमण श्री आवश्यक सागर जी आर्यिका समितिश्री माता जी	श्रमणाचार्य श्री विभवसागर जी महाराज	श्री दिग. जैन तीर्थक्षेत्र गजपंथा जी (महाराष्ट्र)
३५.	श्रमण श्री विश्वक्षसागर जी महाराज	श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महाराज	श्री दिग. जैन मंदिर कुंवरपुर जिला- पन्ना (म.प्र.)

क्र	साधु का नाम	दीक्षा गुरु	चातुर्मास स्थान/ सम्पर्क सूत्र
३६.	गणिनी श्रमणी आर्यि. विशालश्री माताजी श्रमणी आर्यि. विमुक्तश्री माताजी श्रमणी आर्यि. विदर्शनाश्री माताजी श्रमणी आर्यि. विशुद्धश्री माताजी श्रमणी आर्यि. विसिद्धिश्री माताजी श्रमणी आर्यि. विशुचिश्री माताजी श्रमणी आर्यि. विश्रुतिश्री माताजी क्षुल्लिका विश्रितश्री माता जी	पू. गणाचार्यश्री विरागसागर जी महाराज गणिनी आर्यि. विशाश्री माता जी	श्री क्षेत्र श्रवण बेलगोला भगाई बसदि जिला- हासन (कर्नाटक) स.सूत्र- ब्र. सुनीता दीदी मो. ८३६९२२६४२४ ब्र.शिवा दीदी, ८८९०४००८३४
३७.	गणिनी श्रमणी आर्यि. विभाश्री माताजी श्रमणी आर्यि. विविनयश्री माताजी श्रमणी आर्यि. सर्वश्री माताजी श्रमणी आर्यि. शुभश्री माताजी श्रमणी आर्यि. सिद्धिश्री माताजी श्रमणी आर्यि. संयमश्री माताजी श्रमणी आर्यि. साम्यश्री माताजी श्रमणी आर्यि. समयश्री माताजी क्षुल्लिका शीलश्री माता जी	पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज गणिनी आ. विभाश्री माता जी	श्री आदिनाथ दिग.जैन मंदिर पर्वत पाटिया, सूरत (गुजरात)- ३९५०१० स.सू.-अध्यक्ष ऋषभ लोहाडिया मो. ९८२४४०३४०० महामंत्री- ओमप्रकाश सेठी मो. ९८७९२९४०५२
३८.	गणिनी श्रमणी आर्यि. विन्ध्यश्री माता जी श्रमणी आर्यि. पदमश्री माता जी श्रमणी आर्यि. सुनन्दनश्री माता जी श्रमणी आर्यि. सुवन्दनश्री माता जी श्रमणी आर्यि. सुचन्दनश्री माता जी क्षुल्लिका पर्वश्री माता जी	पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज गणिनी आर्यि. विन्ध्यश्री माता जी	श्री दिग. जैन मंदिर पी.ओ. दिनहटा जिला- कुच विहार (पं.बंगाल) सं.सू.- विमल सेठी, ९४३४०५७८५८ सन्जू पाटोदी, ९८३२३८५७५
३९.	गणिनी श्रमणी आर्यि. विज्ञाश्री माता जी श्रमणी आर्यि. विकक्षाश्री माता जी श्रमणी आर्यि. ज्ञानश्री माता जी श्रमणी आर्यि. ज्ञाताश्री माता जी श्रमणी आर्यि. ज्ञप्तिश्री माता जी श्रमणी आर्यि. ज्ञेम्याश्री माता जी श्रमणी आर्यि. ज्ञायकश्री माता जी श्रमणी आर्यि. ज्ञेयकश्री माता जी क्षुल्लिका विभद्राश्री माता जी	पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज गणिनी आर्यि. विज्ञाश्री माता जी गणिणी आर्यि. विज्ञाश्री माता जी पू. गणाचार्यश्री विरागसागर जी महाराज	श्री दि.जैन मंदिर वरूण मान सरोवर जयपुर (राजस्थान) अध्यक्ष- एम.पी. जैन, ९८२९२५०७७० बा.ब्र. मुनमुनदीदी,
४०.	श्रमणी आर्यिका विनतश्री माता जी क्षुल्लिका विक्रमाश्री माता जी	पू. गणाचार्यश्री विरागसागर जी महाराज	श्री दिग.जैन मंदिर बडागांव जिला- टीकमगढ़ (म.प्र.) सं.सू.- ब्र. दीपादीदी, ९३४०६९३१८४ महेन्द्र जैन, ९४२५१४१५७९

क्र	साधु का नाम	दीक्षा गुरु	चातुर्मास स्थान/ सम्पर्क सूत्र
४१.	श्रमणी आर्यिका विदक्षाश्री माता जी	पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज	श्री शान्तिनाथ दिग.जैन मंदिर, जैन बोर्डिंग, ग्राउण्ड होटल के पास, फ्रीगंज उज्जैन (म.प्र.) पिन- ४५६००१ सं.सू. तेजकुमार जैन, ९८२७२७५८०८
४२.	श्रमणी आर्यि. ज्ञेयश्री माता जी श्रमणी आर्यि. दीक्षाश्री माता जी	गणिनी आ. विज्ञाश्री माता जी गणिनी आ. सौभाग्यमती श्री माता जी	श्री पार्श्वनाथ दिग. जैन मंदिर] पाण्डु मम्बई
४३.	श्रमणी आर्यि. विनिवृताश्री माता जी	पू. गणाचार्यश्री विरागसागर जी महाराज	---
४४.	श्रमणी आर्यि. विद्यान्तश्री माता जी श्रमणी आर्यि. विद्वान्तश्री माता जी श्रमणी आर्यि. विजितान्तश्री माता जी	श्रमणाचार्य विमर्शसागर जी महाराज	श्री सुपार्श्वनाथ दिग. जैन मंदिर लखदौना स.सू.- ब्र. अंकित भैया, मो. ८९६६०८९८७१ रीतेश जैन, ९४२५४४६५६६
४५.	श्रमणी आर्यि. समर्थश्री माता जी श्रमणी आर्यि. सार्थकश्री माता जी	श्रमणाचार्य विमदसागर जी महाराज	---
४६.	श्रमणी आर्यि. अर्हंश्री माता जी श्रमणी आर्यि. संस्कृतश्री माता जी	श्रमणाचार्य विभवसागर जी महाराज	श्री दिग. जैन मंदिर, बाशी नंदी मुंबई (महाराष्ट्र)
४७.	क्षुल्लक श्री विगुण सागर जी	श्रमणाचार्य विशदसागर जी महाराज	श्री दिग. जैन तीर्थक्षेत्र कुन्थुगिरि (महा.)
४८.	क्षुल्लक श्री अकलंकसागर जी	श्रमणश्री विनिश्चलसागर जी महाराज	श्री दिग. जैन मंदिर लवकुश नगर जिला- छतरपुर (म.प्र.)
४९.	क्षुल्लक विश्वप्रभुसागर जी	पू. गणाचार्यश्री विरागसागर जी महाराज	श्री दिग.जैन मंदिर मण्डी बामोरा
५०.	क्षुल्लिका धर्मश्री माताजी	श्रमणाचार्य विनिश्चयसागर जी	बीसपंथ कोठी सम्मेद शिखर मधुवन
५१.	क्षुल्लिका ह्रींश्री माताजी क्षुल्लिका सिद्धश्री माताजी	श्रमणाचार्य विभवसागर जी	----

प.पू. राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री १०८ विरागसागर जी महमुनिराज ससंघ वर्षायोग २०१८

पू. गणा.	संघ		आचार्य	मुनि	गणि.	आर्यि.	ऐलक	क्षुल्ल.	क्षुल्लि.	योग
१	मूल	शिष्य	–	२३	–	३२	१	१०	१८	८४
	१	प्रशिष्य	–	२	–	–	–	–	–	२
		अन्य	–	–	–	–	–	–	–	–
		योग		२५		३२	१	१०	१८	८६+१=८७
	संघ	शिष्य	९	१७	४	८	–	४	२	४४
	५०	प्रशिष्य	–	६९	–	४५	३	९	१३	१३८
		अन्य	–	१	–	१	–	२	–	४
	५१	**योग**	**९**	**८७**	**४**	**५४**	**३**	**१५**	**१५**	**१८६**
१		**कुल योग**	**९**	**११२**	**४**	**८६**	**४**	**२५**	**३३**	**२७३+१=२७४**

घुटने का दर्द

संकलन : श्रमणी आ. विवक्षाश्री माता जी

वृद्धावस्था, शारीरिक कमजोरी, रक्तहीनता आदि के कारण घुटने में दर्द होता है।

कभी किसी के एक घुटने में या किसी के दोनों घुटनों में दर्द होता है। रात्रि में दर्द बढ़ जाता है। वर्षा व शीतकाल में दर्द बढ़ जाता है। चलने व उठने, बैठने में कष्ट होता है। घुटना कड़ा हो जाता है सूजन आ जाती है।

- ❖ घुटने आदि अंगो पर जहाँ सूजन हो और पथराया सा लगे उस जगह सौठ भुने गर्म तेल की मालिस करे अंग पर कपड़ा बांधे तथा शीत व हवा से बचाये। खटाई व शीतल पदार्थ नहीं खावे।
- ❖ सौठ चूर्ण, काली मिर्च, बायबिडंग तथा सेंधा नमक का चूर्ण बनाकर रख लें। इस चूर्ण की ३-३ ग्राम मात्रा चासनी में मिलाकर चाटें। घुटने दर्द में आराम मिलेगा।
- ❖ शुद्ध गुग्गुल १० ग्राम तथा इससे दुगना गुड़ लेकर दोनों को खुब बारिक पीसकर छोटे-छोटे बेर के समान गोलियाँ बनाकर रख लें। नित्य प्रात: सायं एक-एक गोल थोड़ी सी देशी घी के साथ लेते रहने से जोड़ों का, घुटने का दर्द दूर होता है, गठिया और साइटिका में भी लाभ मिलता है।
- ❖ नीम के छाल को पीसकर पेस्ट बना कमर व घुटने में लेप करें दर्द में लाभ मिलेगा।
- ❖ लौकी के टुकड़े को गर्म कर दर्द वाले स्थान पर लेप करें, जल्दी ही आराम मिलेगा।
- ❖ स्ट्राबेरी (फल) घुटनों के दर्द व गठिया के लिए बहुत ही लाभदायक है।
- ❖ सुबह खाली पेट ३-४ अखरोट की गिरियां खाने अथवा सौंठ के काढ़े में एरण्ड का तेल १-२ चम्मच मिलाकर पीने से घुटनों कमर व पीठ के दर्द में राहत मिलता है।
- ❖ मेथी एक चम्मच चूर्ण जल के साथ सुबह सेवन से घुटनों के दर्द से छुटकारा मिल सकता है।
- ❖ कभी-कभी नारियल की गिरी खाने से घुटनों का दर्द नहीं होता है।
- ❖ खीरे का सेवन अथवा रस भी लाभदायक होता है।

संगति का प्रभाव

श्रमण मुनि विशेषसागर जी

रिसोड़- जीवन में संगति का बहुत प्रभाव पड़ता है, भोगीयों की संगति से विषय भोगों के भाव उत्पन्न होते हैं, योगी- त्यागियों की संगति से त्याग के भाव होते हैं। दिगम्बर संत त्याग-तपस्या की प्रति-मूर्ति होते है। मुनि के दर्शन करने से, चर्या देखने से त्याग करने की शिक्षा मिलती हैं उक्त उद्‌गार प.पू. राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री १०८ विरागसागर जी गुरुदेव के धर्म प्रभावक शिष्य प.पू. श्रमण मुनि श्री विशेषसागर जी महाराज ने धर्म सभा की सम्बोधित करते हुए कहा।

पू. मुनिश्री ने आगे कहा पूज्य पुरूषों का पंच परमेष्ठी का आदर-सत्कार करना विनय है। कुन्दकुन्द स्वामी ने मानसिक, वाचनिक व कायिक के भेद से विनय ३ प्रकार का कहा है। सम्यग्दृष्टि जीव मंदिर में, निर्ग्रन्थ गुरुओं के पास हाथ बांधकर वहीं हाथ जोड़कर आता है, सिर झुकाकर, नम्रता के साथ आता है। अज्ञानी जीव कर्मों को बांधता है और ज्ञानी जीव कर्मो का संवर व निर्जरा करता है।

पू. मुनिश्री ने आगे कहा पुण्य कर्म के उदय से शुभ भाव होते है। मंदिर आने के गुरुओं के दर्शन करने के, धर्म कार्य करने के भाव होते है और पाप कर्म के उदय से अशुभ भाव होते है। मंदिर के सामने से निकल जाते पर मंदिर जाने के भाव नहीं होते। आप ने कुशल व्यापारी को देखा होगा कि वह धन से धन कमाता है उसी प्रकार पुण्यात्मा जीव पुण्य से पुण्य कमाता है।

विराग सेतु

बारह-विरागो

(जलधरमाला ऽऽऽऽ ॥॥ऽऽऽऽ = 12 वर्ण)

(प.पू. राष्ट्र संत गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज)

डॉ. उदयचन्द्र जैन

जिन्होंने अल्प वय में ही मोक्षमार्ग पर आरूढ़ होकर क्षितिज की ऊँचाईयों को प्राप्त किया, घनघोर उपसर्गो में भी समता धारण कर आत्मान्वेषी रहे, ज्ञान की अथाह गहराईयों में डुबकी लगाकर प.पू. आचार्य श्री कुन्दकुन्द स्वामी के प्राचीन ग्रंथ वारसाणु पेक्खा पर संस्कृत 'सर्वोदय टीका' को लिखकर जिनागम के लिए एक दुर्लभ रत्न प्रदान किया है। ऐसे सिद्धांतरत्न प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर महाराज के जीवन दर्शन का सुंदर हृदयस्पर्शी चित्रण करने वाले डॉ. उदयचंद्र जैन उदयपुर के विराग चेतना युक्त नवीन प्राकृत महाकाव्य 'विराग-सेतु' की क्रमिक प्रस्तुति-

संकार-सिक्खण-सुसुत्त-सु-सासणं च
दादूण साहू-समए चरएंति सम्मं।
आसीस-जुत्त-गुरु-पाद-समप्पि-साहू
सोणागिरिं तध सिहोंणिय-मत्थ सेगं।। २३।।

विराग मुनि तो संस्कार शिविर, शिक्षण शिविर, सूत्रपाठ एवं अपूर्व जिन शसन की दृष्टि देकर गतिशील बने रहते हैं। सो ठीक है साधु गुरु आशीष युक्त चरणों मुं समर्पित यदि हैं तो समय के अनुशीलन में अच्छी तरह लगते हैं। वे विरागसागर इसी तरह की भावना युक्त सिंहोनिया में शान्ति, कुन्थु और अरहनाथ के मस्तकाभिषेक को सम्पन्न कराते हुए सोनागिरि को प्राप्त होते हैं।

सोवण्ण-सोणगिरि-उच्च-विसेस-ठाणे
राजेदि ताव मुणिदंत-तवेहि माणे।
तित्थो इमो मणहरो पयडी सु पुण्णो
वाणप्फदी-जल-णदीण पपुण्ण-सीलो।। २४।।

सोनागिरि तो उच्च स्थान पर स्थित सुवर्ण की कान्ति युक्त ही है। जो तपस्वियों के तप से अपने प्रमाणों को दे रहा है। यह तीर्थ मनोहर प्रकृति की संपदाओं से युक्त है। इसके उन्नत भाग एवं समीपस्थ नाना प्रकार की वनस्पतियाँ एवं जल से पूर्ण नदियों के प्रवाह हैं।

तं दंसिदूण जिण-तित्थ-मणे वि संती
णाणा-गुणेसु वि पउत्ति-विराग-भावो।
किं मे हविस्समि सुझाण-पवाह-पुण्णो
जम्माजरादु विरहीण सदा ही सुद्धो।। २५।।

उस जिनतीर्थ को देखकर जहाँ मन में शान्ति उत्पन्न होती है, नाना गुणों में प्रवृत्ति होती है, विराग भाव उत्पन्न होते हैं। वहीं यह भावना भी उत्पन्न होती कि क्या मैं भी सु ध्यान के प्रवाह युक्त हो सकूँगा? क्या मैं भी जन्म जरादि से मुक्त सदा शुद्ध हो सकूँगा?

चिंतेज्ज माणस-मणुण्ण-सु-हंस-साहू
साहुं विराग-समयं च सु-भावणं च।

पत्तेदि ठाण-अजियं अवसग्ग-जुत्तो
भिंडं च मास-चदुवास-सुघोस-वंतो।। २६।।

साधुओं का मानस तो मनोज्ञ होता है वे हंस की तरह होते हैं। इसलिए तो समय/ सिद्धान्त साधना करते, विराग उत्पन्न करते और उत्तम तप और उत्तम भावना को फैलाते हैं। विरागसागर मुनि तो उपसर्ग युक्त भी अजित स्थान को प्राप्त होते हैं। वे मुनि श्री चातुर्मास की घोषण युक्त भिण्ड की ओर चल पड़ते हैं।

अंबाहए तिवरियाइ सुगाम-पच्छा
मेहे वि पोरस-पुरे णयरे वि सोणिं।
पत्तेदि पोरमि-पुरं सदभावणं च
दाएज्ज तं च विमलं पद सत्थ-तच्चं।। २७।।

वे अम्बाह तिवरिया आदि ग्रामों के पश्चात् मेहगाँव, पोरसा आदि में धर्म प्रभावना करते। वे सोनी, पोरमी आदि क्षेत्रों में सद्भावना का दान करते तथा वे आचार्य विमलसागर के विमल आशीष युक्त शास्त्र के पद एवं उत्तम तत्त्व को विमल रूप में रखते हैं।

भिंडस्स आगद-जणा णयरं पडिं चं
णेएंति भत्ति-पबलाहि सुवज्ज-वज्जे।
साहस्स-पंच-जण-मेदिणि-मेद-घोसं
जुत्तं जयं पडिजयं जयएज्ज पुव्वं।। २८।।

भिण्ड के आगत जन तो अत्यंत भक्ति युक्त, बाद्य यंत्रों की ध्वनि के साथ नगर में प्रवेश कराते हैं। उस समय पाँच हजार के जन समूह में अत्यंत जयकार होता है।

अस्सीइ अट्ठ-समए पुर-भिंड-भागे
आपुव्व-उच्छव-सुणाण-तवादि-भावो।
सज्झाय-पेम्म-सुद-सिक्खण-काल-जाए
गंगासमा पवहमाण-सु-धम्म-लाहो।। २९।।

सन् १९८८ में भिण्ड भाग में अपूर्व उत्सव युक्त चातुर्मास होता है। जिसमें ज्ञान, तप आदि की क्रियाएँ होती है। लोगों में स्वाध्याय प्रेम जागृत किया जाता है, श्रुत शिक्षण आदि भी गंगा के समान अतिशील उत्तम धर्म लाभ वाले होते हैं।

भिडे पुणो हवदि वास-अपुव्व-सेट्ठो
अट्ठाणवे वि जण-सिक्खण-सुत्त-पाढं।
जूहा जुवा जुवदिमाण जुदा हि अत्थ
जोगिस्स जोगणिलयं अवि इच्छपुण्णा।। ३०।।

भिण्ड में पुनः १९८९ चातुर्मास अपूर्व एवं श्रेष्ठ था, जिसमें जन शिक्षण के सूत्र ही विद्यमान थे। युवा समूह एवं श्रावकाएँ इस युवा योगी के सूत्र निलय की इच्छा करते हैं।

सूरिं वि वीर-मुणि-माणस-माण-जुत्तो
अत्थेव चिट्ठदि वि जणाण सुदेसणाए।
तच्चण्हु-साहु-कुमुदो अदिणंद-दाई
सारस्सदं च जिणवाणि-जणाण बोहे।। ३१।।

आचार्य वीरसागर रूपी मान सरोवर हंस सम्मान युक्त उस नगर में स्थित थे, वे भी अपनी सम्यक् देशना से लोगों को लाभ पहुंचा रहे थे। तत्वज्ञ साधु कुमुदनन्दी भी लोगों के लिए सारस्वत जिनवाणी को बोध दे रहे थे।

क्रमश ....

आषाढ मास के व्रत कल्याणक महोत्सव

२८ जुलाई २०१८	श्रावण कृष्ण १	वीरशासन जयन्ती
२९ जुलाई २०१८	श्रावण कृष्ण २	श्री मुनिसुव्रतनाथ गर्भ कल्याणक
५ अगस्त २०१८	श्रावण कृष्ण ८	अष्टमी व्रत
६ अगस्त २०१८	श्रावण कृष्ण ९	श्री कुन्थनाथ जी गर्भ कल्याणक
७ अगस्त २०१८	श्रावण कृष्ण १०	रोहिणी व्रत
१० अगस्त २०१८	श्रावण कृष्ण १४	चतुर्दशी व्रत
१३ अगस्त २०१८	श्रावण शुक्ल २	श्री सुमतिनाथ जी गर्भ कल्याणक
१६ अगस्त २०१८	श्रावण शुक्ल ६	श्री नेमीनाथ जी जन्म, तप कल्याणक
१७ अगस्त २०१८	श्रावण शुक्ल ७	मोक्ष सप्तमी, मुकुट सप्तमी, श्री पार्श्वनाथ जी मोक्ष कल्याणक
१८ अगस्त २०१८	श्रावण शुक्ल ८	अष्टमी व्रत
२५ अगस्त २०१८	श्रावण शुक्ल १४	चतुर्दशी व्रत
२६ अगस्त २०१८	श्रावण शुक्ल १५	रक्षा बंधन सलूनापर्व, श्री श्रेयांस नाथ जी मोक्ष कल्याणक मुनि विष्णुकुमार एंव आ. अकम्पानाचार्य पूजा।

अगस्त माह के महोत्सव दिवस

जन्म/दीक्षा/पुण्यतिथि	**तारीख**	**स्थान /नाम**
जन्म दिवस	२.८.१९७२	गैसावाद, गणिनी आ. विज्ञाश्री माता जी
पुण्य तिथि	२.८.२००३	भिलाई, मुनि श्री विश्वधर्म सागर जी
जन्म दिवस	३.८.१९८३	भिलाई, आर्यिका वियुक्तश्री माता जी
जन्म दिवस	३.८.१९४७	अहमदाबाद, क्षुल्लिका विक्षमाश्री माता जी
जन्म दिवस	५.८.१९७२	रुर (भिण्ड), आचार्य विशुद्धसागर जी मुनिराज
जन्म दिवस	६.८.१९९०	पन्ना, आर्यिका विजिगिसा श्री माता जी
जन्म दिवस	७.८.१९८८	असोखर (भिण्ड), आर्यिका विसंयोजना श्री माता जी
दीक्षा दिवस	९.८.१९९२	द्रोणगिरि, ऐलक श्री विनम्रसागर जी महाराज
जन्म दिवस	१०.८.१९८५	भिलाई, आर्यिका विचक्षणाश्री माता जी
जन्म दिवस	१०.८.१९७५	गयाजी, आर्यिका विवक्षाश्री माता जी
जन्म दिवस	१२.८.१९८३	जगदलपुर, मुनि श्री विहसंत सागर जी
जन्म दिवस	१२.८.१९८९	भिण्डर (राज.) आर्यिका विकुन्दन श्री माता जी
जन्म दिवस	१५.८.१९६४	दिल्ली, क्षुल्लक श्री विदेह सागर जी
जन्म दिवस	१६.८.१९८२	विग्रा (रायसेन), मुनि श्री विदाम्बर सागर जी
दीक्षा दिवस (ऐलक)	१८.८.१९९९	भिण्ड, आचार्य विकर्ष (प्रज्ञ) सागर जी, मुनि विश्रांत सागर जी
जन्म दिवस	२०.८.१९७५	जसपुर, मुनिश्री श्री विशेष सागर जी
जन्म दिवस	२२.८.१९५२	ललितपुर, आर्यिका विनोदश्री माता जी
जन्म दिवस	२२.८.१९८६	सिवनी, आर्यिका विदितश्री माता जी
पुण्य तिथि	२०.८.२०१५	पथरिया, आर्यिका विहारश्री माता जी

जन्म दिवस	२५.८.२०१५	अंकलीकर, प.पू. आचार्य आदिसागर जी
पुण्य तिथि	२२.८.२०१७	ग्वालियर, आर्यिका विकुलश्री माता जी
जन्म दिवस	२०.८.१९९५	पवई, आर्यिका विजिज्ञासाश्री माता जी
जन्म दिवस	२४.८.१९५९	आगरा, क्षुल्लक विश्वानुत्तर सागर जी
दीक्षा दिवस	२९.८.२०१५	भीलवाड़ा, मुनि श्री सर्वार्थ सागर जी, मुनिश्री साम्यसागर जी, मुनिश्री समर्थ सागर जी, मुनिश्री सहजसागर जी, मुनिश्री समत्व सागर जी, मुनिश्री सम्पूर्ण सागर जी, मुनिश्री सदय सागर जी।

अहंकार का परिणाम

संकलन- आ. विदूषीश्री माता जी

एक बार की बात है कि चार मित्र थे, उनके घर के दरवाजे एक दूसरे के आमने-सामने थे, वे सभी वहीं खेलते थे। एक बार एक पंडितजी वहाँ से निकले, उन्होंने देखा और चारों को अपने पास बुलाया, चारों कुशाग्र बुद्धि वाले थे। पश्चात् पंडित जी ने उनके माता-पिता को बुलाया और कहा कि- आप इन लोगों को इधर क्यों रखे हो ? इनको पढ़ने के लिये बनारस भेज दो और उनके जाने की व्यवस्था की गई। वहाँ स्कूल में बालकों को विषय चुनने को दिया गया उनमें से पहले मित्र ने अंक विद्या, दूसरे ने शिल्पकला, तीसरे ने चित्रकला, चौथे ने मंत्र विद्या का चयन किया। पढ़ते-पढ़ते उनका बहुत सारा समय व्यतीत हो गया और वह अपनी विद्या में दक्ष हो गये। पूर्ण शिक्षा के बाद उन्हें प्रमाण पत्र दिया गया और वे वापिस अपने गाँव की ओर बढ़े। पहले बस वगैरह नहीं चलती थी, जिससे पैदल यात्रा करनी पड़ती थी। पैदल चलते-चलते रास्ते में एक घने जंगल में आ गये। रात्रि प्रारंभ हो जाने से आगे चलना उचित नहीं था, उन्होंने उस जंगल में ही विश्रांति करने का विचार किया लकिन रात्रि के बारह घण्टे का समय निकालना है और सभी के हिस्से में तीन-तीन घण्टे हो रहे हैं तो सभी लोगों ने विचार किया कि सभी बारी-बारी से पहरा देंगे। पहला बोला मैं पहले जागूँगा। तो सभी लोग सो गये, पहला जाग रहा था, रात्रि निकालनी थी क्या करें ? उसने देखा शीशम के पेड़ हैं उसके नीचे लकड़ी पड़ी है उसने एक प्रकार की लकड़ी चुनी, चार-छह लकड़ी चुनकर उनमें अंक बना दिये, तीन घण्टे पूरे हो गये, तब उसने दूसरे को जगाया कि हमारा समय हो गया है, मैंने लकड़ी निकाल कर के रख दी है, आप शिल्पकला में निपुण हैं आप जो बनाना चाहते हैं बना सकते हैं। वह सोचता है कि जंगल में जंगल का राजा शेर होता है और उसने दो-तीन घण्टे में एक शेर की आकृति को तैयार कर दिया, उसका भी समय हो गया। उसने तीसरे को जगाया, उसने कहा- आप चित्रकला में निपुण हैं, आप इसमें जो रूप रंग देना चाहें दे सकते है। उसने शेर के ही समान रंग भर दिये और शेर तैयार हो गया। उसका भी समय पूरा हो गया। उसने चौथे मित्र को जगाया कि हमारा समय पूरा हो गया है, अब आपका समय है, वह कहता है- मैंने शेर की आकृति को तैयार किया है अब अपना काम आप करो। चौथा मित्र अहंकार से कहता है कि सबने अपनी-अपनी कुशलता दिखा दी अब मैं क्यों न मंत्र विद्या का प्रयोग करूँ और मंत्र विद्या ऐसी विद्या है, जिस पर फूँक दी जाये तो काम करती है। क्योंकि मंत्र विद्या निष्प्राण में भी प्राण दे सकती है। दूरदृष्टि के अभाव में तथा अभिमान के कारण उसने यह तो नहीं सोचा कि यदि प्राण प्रतिष्ठा हो गई तो वह हम सबको नहीं छोड़ेगा। उसने सोचा मैं भी अपनी कला को दिखाऊँगा और मंत्र की सिद्धि करना शुरु कर दिया उसने अभी दो-चार बार पुष्प छिड़के कि वह शेर जीवित हो गया। गर्जना करने लगा वह भूखा तो था ही और उसने सभी को भक्षण कर लिया। यह अहंकार का ही परिणाम है कि उन्हें अपने जीवन से भी हाथ धोना पड़ा।

समाचार

गया में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा सम्पन्न

संतों का दर्शन सान्निध्य पुण्य के उदय से ही प्राप्त होता है। ऐसे ही तीव्र पुण्य का उदय गया (विहार) वासियों का हुआ। जो उन्हें पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव में प.पू. राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज ससंघ ८५ पिच्छीओं का सान्निध्य प्राप्त होने को सौभाग्य प्राप्त हुआ। दिल्ली से सम्मेद शिखर तीर्थ की पदयात्रा करते हुए प.पू. गुरुदेव ने जेसे ही अयोध्या से विहार किया तो गया जैन समाज ने दिनांक २२ जनू से २७ जून तक होने वाले पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव में पावन सान्निध्यता के लिये निवेदन किया। किन्तु इतनी अल्प अवधि में गया पहुचाना संभव नहीं था अत: पू. गुरुदेव ने उन्हें अपना मंगल आशीष प्रदान किया किन्तु गया जैन समाज की पू. गुरुदेव के प्रति अटूट भक्ति थी और सभी से पू. गुरुदेव के सान्निध्य में ही पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव करने का निश्चय कर प.पू. गुरुदेव को श्रीफल भेंट कर निवेदन किया। समाज की भक्ति देख पू. गुरुदेव भी पैर में कष्ट होने पर भी अनवरत विहार कर ३० जून को गया में भव्य अगवानी के साथ नगर प्रवेश किया। ऐलाचार्य श्री विशुद्धसागर जी मुनिराज ने पू. गणाचार्य अगवानी कर भक्ति पूर्वक मिलन किया। प.पू. गुरुदेव के आने से समाज में बड़ा ही उत्साह व प्रसन्नता हुई।

दिनांक ३० जून को प.पू. गणाचार्य श्री द्वारा मूर्तियों की प्रतिष्ठा हेतु तप ज्ञान कल्याणक के संस्कार किये गये। विधि नायक भगवान श्री मुनिसुव्रतनाथ को केवल ज्ञान होने के साथ ही भगवान के समवशरण में गणधर परमेष्ठी के रूप में प.पू. गुरुदेव श्री विरागसागर जी ने भगवान की दिव्य देशना का सार भव्य जीवों के कल्याणार्थ अपनी अमृतमयी वाणी से सुनाया।

दिनांक १ जुलाई को तीर्थ कर मुनि सुव्रतनाथ का मोक्ष कल्याणक महोत्सव मनाया गया। १७ वर्ष पूर्व किये गया चातुर्मास की पुण्य स्मृतियों के साथ अपने प्रवचन में पू. गणाचार्य श्री ने अपनी विशाल पद यात्रा में अहिंसा व्यसन मुक्ति शाकाहार, बेटी बचाओ और स्वच्छता अभियान के ५ सूत्रों का सभी को संकल्प कराया। शाम को श्री जी की भव्य शोभा यात्रा नगर में निकाली गई। तत्पश्चात् श्री जी का अभिषेक कर वेदी में विराजमान किया।

सानन्द सम्पन्न हुए इस पंच कल्याणक महामहोत्सव में श्रीमती धनपति सेठी श्री प्रकाश चन्द्र जी सेठी को माता पिता श्री राजकुमार जी कासलीवाल, श्रीमती कुसुम कासलीवाल को सौधर्म इन्द्र, श्री विजय कुमार काला श्रीमती माला काला को धनपति कुवेर, श्री दीपक गंगवाल श्रीमती अल्पना गंगवाल को यज्ञनायक बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। ध्वजा रोहण श्री राजकुमार जी कासलीवाल द्वारा किया गया। प्रतिष्ठाचार्य श्री मनीष जी शास्त्री द्वारा प्रतिष्ठा क्रियाये विधि पूर्वक सम्पन्न की गई मंच कलाकार श्री चक्रेश जी द्वारा संस्कृतिक कार्यक्रमों अच्छी प्रस्तुति दी गई।

गया जैन समाज गौरवान्वित हुआ- प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज के ससंघ ८५ पिच्छियों में गया की दो बेटियाँ जो १८ वर्ष पूर्व संसारिक जीवन को छोड मोक्ष मार्ग पर बढने हेतु प.पू. गणाचार्य श्री के संघ में गई थी जो आर्यिका विवक्षा श्री माता जी एवं आर्यिका विकम्पा श्री माता जी के रूप में पूज्यता को प्राप्त कर प. गुरुदेव के साथ आई जिन्ह पाकर समस्त जैन समाज तथा पूर्व गृहस्थिक परिवार गौरवान्वित हुआ।

इतिहास रचा- गया के इतिहास में प्रथक बार ३५ साधु-साध्वियों का चतुर्विध संघ आया अभी एक ही संघ के इतने साधु-साध्विओं के दर्शन किसी ने भी नहीं किये।

बौद्ध साधुओं ने दर्शन किये- प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज ससंघ के गया आगमन पर बौद्ध साधु बौद्ध गया मठ के दर्शनार्थ पधारे उनके साथ वियतनाम से आये बौद्ध साधु भी दर्शनार्थ पधारें जिन्होंने पू. गुरुदेव से मिलकर अत्यन्त प्रसन्नता प्रकट की तथा पू. गुरुदेव को बौद्ध गया पधारने हेतु निवेदन किया। तथा अपनी विनयांजली अर्पित करते हुए कहा कि पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी का अहिंसा का संदेश देश व विदेशों में शांति स्थापित करेगा। वियतनाम में भी भगवान महावीर के अहिंसा का संदेश देने हेतु प.पू. गणाचार्य श्री को वियतनाम चलने का निवेदन किया।

संयम जैन, गया (विहार)

मधुवन में ऐतिहासिक मंगल प्रवेश

शाश्वत तीर्थराज सम्मेद शिखर जी की पुण्य धरा पर १८ जुलाई २०१८ को प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज ससंघ ८५ पिच्छीयों के भव्य मंगल प्रवेश में पूरे मधुवन को रंगौली तथा तोरण द्वारों से सजाया गया। पूरे मधुवन में उत्साह था। पू. गणाचार्य के मंगल भेदी जयकारों से पूरा मधुवन गूंज उठा इतिहास में पहली बार ८६ साधु साध्विओं

के विशाल चतुर्विध संघ के दर्शन कर समुचा मधुवन झूम उठा। जगह जगह पर स्वागत में पू. गणाचार्य श्री पादप्रक्षालन किया गया। पू. गणाचार्यश्री ससंघ की अगवानी करने आचार्य श्री निरंजन सागर जी आचार्य श्री तन्मय सागर जी ऐलाचार्य श्री मोक्षसागर जी ससंघ आर्यिका सुरत्नमती माता जी ससंघ आर्यिका सृष्टिमती माता जी आदि सहित अनेक साधु-साध्विओं ने अगवानी की। श्रमण मुनिश्री विश्वेश सागर जी ने १२ वर्ष बाद अपने गुरुदेव पाद प्रक्षालन पूजन तथा आचार्य वंदना कर भव्य मिलन किया। वहीं पू. गणाचार्य श्री के अन्य शिष्य प्रशिष्यों ने भी आचार्य वंदना कर आशीर्वाद प्राप्त किया। गुरु शिष्य के मिलन का दृश्य अलौकिक था। हजारों श्रद्धालुओं ने पू. गणाचार्य श्री के दर्शन कर आशीर्वाद प्राप्त किया। मधुवन में प्रवेश कर प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज सर्व प्रथम अपने पूज्य गुरुदेव श्री विमलसागर जी महाराज की समाधि स्थल गये। जहाँ भक्ति पूर्वक आचार्य वंदना कर अपने गुरुदेव के चरणों में माथा टेक तत्पश्चात् तेरह पंथी कोठी में विधिवत मंगल प्रवेश किया। जिन मंदिर में दर्शन कर धर्म सभा में विशाल जन सैलाव को अपना आशीर्वाद दिया।

संघपति श्री अशोक कुमार भंवरलाल जी मालपुरा (राजस्थान) ने इतने विशाल संघ मालपुरा से सम्मेद शिखर जी कि विशाल पद यात्रा कराकर इतिहास रच दिया। आज तक किसी ने इतने विशाल संघ की इतनी बड़ी लगभग २००० किलो मी. से भी अधिक पद यात्रा नहीं करायी होगी। इस यात्रा में चौका लेकर साथ चले श्री महीपाल जी, श्रीमती अचला जैन, आगरा सहित संघपति श्री अशोक कुमार जी भवर लाल जी मालपुरा का सम्मान श्री दिग. जैन तेरह पंथी कोठी द्वारा किया गया।

कमल किशोर, महामंत्री तेरह पंथी कोठी, मधुवन

विपुलाचल पर हुआ ग्रंथ का समापन

भगवान महावीर स्वामी जी की प्रथम देशना स्थली विपुलाचल पर्वत राजग्रही पर प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज ने आचार्य माघ नन्दी कृत शास्त्र सारग समुच्चय पर २ हजार से अधिक चूर्णी सूत्रों की रचना की है। उस चूर्णी सूत्र ग्रंथ के हिन्दी अनुवाद का समापन ८५ पिच्छी तथा सम्मेद शिखर तीर्थ पदयात्रा के संघपति श्री अशोक कुमार भवरलाल जी मालपुरा (राज.) एवं अनेक श्रद्धालु श्रावकों को उपस्थिति में महोत्सव पूर्वक बडे धूमधाम से किया। तथा भगवान श्री महावीर स्वामी जी की भक्ति पूर्वक वंदना व अर्चना की।

रौनक पापडीवाला, गया

शाश्वत तीर्थ सम्मेद शिखर की वंदना की

प.पू. राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज ससंघ ने जहाँ दिल्ली से सम्मेद शिखर जी की पद यात्रा में भीषण सर्दी के ३ डिग्री तापमान एवं भीषण गर्मी के ४८ डिग्री तापमान में विहार किया उसी प्रकार शाश्वत तीर्थराज सम्मेद शिखर पर्वत पर भीषण आंधी तूफान के साथ भारी वर्षा में २०,२१,२२,२३ जुलाई तक ६ वंदना की। संघपति श्री अशोक कुमार, भवरलाल जी, मालपुरा ने गाजे बाजे के साथ प्रत्येक टोंक पर ध्वजा तोरण बांध कर तीन प्रदक्षणों शान्तिधारा कर रत्न रजत मिश्रत मंगल द्रव्य चढ़ाते हुए पू. गणाचार्य श्री के साथ वंदना की।

पप्पू भैया, दरियाबाद

संकल्प हुआ पूर्ण

संघपति श्री अशोक कुमार भंवर लाल जी मालपुरा वालों ने कारीटोरन (उ.प्र.) में २ से ९ फरवरी २०१४ को आयोजित पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव में प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज को संघ सहित सभी साधुओं को शाश्वत तीर्थ सम्मेद शिखर जी की यात्रा कराने हेतु श्रीफल भेंट कर निवेदन किया था। यात्रा कराने के संकल्प में किसी ने घी, वूरा, चावल व अन्य वस्तुओं का त्याग किया था। प्रतिवर्ष यात्रा हेतु निवेदन करते रहे इस वर्ष पू. गणाचार्यश्री यात्रा कराने, अनुमति के साथ २७ फरवरी को मालपुरी से यह मंगल पद यात्रा प्रारंभ की एवं २० जुलाई को शाश्वत तीर्थ सम्मेद शिखर स्थित समन्तभद्र कूट पर भगवान पार्श्वनाथ के चरणों की तीन पदक्षणा देकर शान्तिधारा कर श्री फल सहित मंगल द्रव्य चढ़ाकर प.पू. गणाचार्य ससंघ से यात्रा में हुई गल्तियों की क्षमा याचना के साथ श्रीफल भेंट कर मंगल आशीर्वाद के साथ प.पू. गणाचार्य श्री ससंघ की शाश्वत तीर्थ सम्मेद शिखर जी की यात्रा कराने का संकल्प पूर्ण किया।

अजय जैन, गया

विराग वर्ग पहेली 32

उदाहरण – र वि रा ग नहीं करना चाहिए। (प.पू. गणाचार्य गुरुवर का नाम) जैसे–विराग

गु	रु	ण	व	रा	वि	रा	ग
सा	ग	ग्री	क्ष्म	म	र	द्वा	रे
पे	श्व	तु	त्र	ल	म्हा	रे	बा
अ	ज	षो	त्रि	पृ	ष्ठ	ल	ष्ण
क	रू	रा	ये	पु	का	रे	कृ
पु	ओ	गु	सं	रू	क	मे	श्री
स्व	य	म्भू	रे	ध	दे	र	खो
ज	म	धु	कै	त	भ	रा	ता

विराग वर्ग पहेली 31 के उत्तर

(1) सिद्धवरकूट
(2) सम्मेद शिखर जी
(3) मथुरा चौरासी
(4) नैनागिर
(5) पावापुर
(6) मुक्तागिर
(7) आहार जी
(8) चंपापुर
(9) द्रौणगिर
(10) गिरनार

नोट– (1) इसमें आपको १० पारसनाथ भगवान के ही क्षेत्र के नाम ढूढ़ने हैं।
(2) जहाँ उत्तर मिले वहाँ ☐ डब्बा बनाये व क्रम से नाम लिखें।
(3) उदा.- इसमें नाम आड़े, तिरछे, ऊपर से नीचे, नीचे से ऊपर भी हो सकता है।

उत्तर भेजनेवाले का नाम व पता (स्पष्ट तथा शुद्ध)

नाम .....मो. .....

पिता/पति का नाम .....

पता .....